



# दो पाटन के बीच

भवानीशकर व्यास 'विनोद'  
गौरीशकर आचार्य 'अरुण'

□ कल्पना प्रकाशन, बीकानेर



## प्रकाशकीय

प्रस्तुत सञ्चलन में राजस्थान के दो लघु प्रतिष्ठ कवियों की समस्त रचनाएँ एक साथ संप्रहीत की गई हैं। उपास के क्षेत्र में तो ऐसे प्रयास यत्न कदा हुई हैं पर काव्य के क्षेत्र में दो सक्ता कवियों की समस्त प्रतिनिधि रचनाएँ एक साथ प्रकाशित करने का सम्भवतः यह प्रथम प्रयास ही है।

श्री भवानीशंकर ध्यास विनोद' ने जहाँ हास्य एवं व्यंग्य के क्षेत्र में अपना विगिष्ट स्थान बनाया है वहाँ शब्द गिल्पी श्री गौरीशंकर आचाय ग्ररुण की रचनाएँ राष्ट्रीय स्तर पर निकलने वाले काव्य-संप्रहो में सम्मिलित की जाती हैं तथा यदा-कदा रेडियो कार्यक्रमों में उद्धृत होती रहती हैं। विनोदजी की रचनाओं में हास्य व साथ प्रखर व्यंग्य हैं तो ग्ररुण जी की कविताएँ सामाजिक परिवर्तन के लिए सङ्गत एवं सायक स्वर प्रदान करती हैं। दोनों की विशेषताएँ एवं उपलब्धियाँ भिन्न-भिन्न होते हुए भी 'यत्तिगत एवं साहित्यिक जीवन में वे अमिन्न रहे हैं तथा कल्पना प्रवाहन में इस 'अभिन्नता' को ही और अधिक उगागर किया है।

दोना कवियाँ ने अब तक हजारों पाठक एवं श्रोता तैयार किये हैं। कल्पना प्रवाहन उन सभी साहित्यानुरागी पाठकों व श्रोताओं के हाथों में यह सञ्चलन प्रस्तुत करते हुए गौरवान्वित हा रहा है। आगा है कि हमारे अय प्रकाशना की तरह इस पुस्तक का भी अपूर्व सङ्योग मिलेगा।

इस अवसर पर मैं सवथी रामदेव आचाय शिवराज छगारणी जगदीश उज्ज्वल, धनञ्जय वर्मा एवं पञ्ज गाम्वाभी को उनके सहयोग एवं भागणन के लिए धन्यवाद देता हूँ।



## श्री गौरीशंकर आचार्य अरुण'

जन्म—६ जुलाई १९३८

शिक्षा—राजस्थान विश्वविद्यालय से  
एम ए (हिन्दी)

प्रकाशन—(अ) आद्या (काव्य-संग्रह)  
कटते बगार (राजस्थानी अनुवाद)

(आ) पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशन  
(इ) काका हायरमी द्वारा संपादित 'हंस  
गुल्ले' में रचनाओं का संचयन

(ई) 'विजय हमारी है एक सचदान इति'  
नामक सफलता में सम्मिलित

सम्प्रति—राजस्थान शिक्षा विभाग के  
अधीनस्थ अध्यापन ।



दो मानचित्र	१	युद्ध का देवता	३८
भारत का भविष्य	३	दुनिया का बाजार	४१
परिवर्तन	५	ढोंग	४४
आस्था का स्वर	७	कवि बनन का फामूला	४५
पौष्प पूजन	८	बुछ पैरोडीज	४७
भारत मा का लाल जवाहर	१०	नारी	४९
गीत	१२	कलम की नोक	५१
अपराध	१३	पाप मुक्तक	५२
विस्फोट	१५	गरद का बाद	५३
बुछ ख्वाइया	१७	अभ्ययना	५४
विवशता	१९	एक प्रश्न एक उत्तर	५५
प्रलय के घन	२१	निमित्त	५६
अनीन की याद	२३	घोटा हो गया है	५७
दुःशा	२५	तुम और हम	५८
आज का सीता हरण	२८	प्रवचना	५९
आत्मा	३१	अगर-अगर की कतरन	६०
डोन्ता नौवा	३३	चीन से	६१
पडोसी को पत्र	३४	कृपणता	६२
बेनावनी	३५	अगर की स्थिति	६३
मैं सिपाही हिन्द का हूँ	३७	इलकाण	६४

## □ दो पतन के बीच

प्रकाशक □ कल्पना प्रकाशन, धुल्लकुच्छ बीकानेर

मुद्रक □ जनसेवी प्रिंटर्स बीकानेर

संस्करण □ प्रथम जनवरी ७२

मूल्य □ दस रुपये मात्र

सर्वाधिकार □ लेखकाधीन

---

DO PATAN KE BEECH

(Poems by Bhawani Shanker Vyas Vinod and  
Gauri Shaker Acharya Arun)



## चमचा पुराण



अच्छा होगा कि शुरुआत में मिटे भाति का अंधेरा ।  
 मैं बतलाऊ कि कविता में चमचो से क्या आशय मेरा ?  
 जिनमें माथा का है अभाव, चिक्नापन जितको बातों में ।  
 है हुकुम हुजुरो किस्मत में पगचम्पी रहती हाथों में ॥  
 जो आने वाले अफसर को प्रभु का अवतार समझते हैं ।  
 पर जान वाले अफसर को रट्टी अखबार समझते हैं ।  
 ऐसे नरपुगव नाम-घन्य जब भी इस युग में आते हैं ।  
 हे अजुन ! अपने कर्मों से वे ही चमचे कहलाते हैं ॥  
 अफसर के इदगिद रहते मंत्री व पीछे मडारते ।  
 और विधायकों की जेबों में मनचाहे चमचे मिल जाते ॥

२

चमचो में चपे बहुत रहता चिपकें तो पक्के चिपकेंगे ।  
 जिस पिण्डों को पकड़ेंगे, उसको रावलपिण्डों समझेंगे ॥  
 ये हा में हा कहने वाले, बातों को पालिश करत हैं ।  
 ये मालिश मास्टर जब चाहे हर जैमी मालिश करतें हैं ॥  
 कुछ कहते जीवन की बाजी ये चमचे नहीं हार सकते ।  
 क्योंकि ये मक्खन-बाजी में ही बाजी सदा मार सकते ॥  
 हमने भी सोचा अच्छा ही अफसर के चमचे बन जाए ।  
 पर जहाँ गये पहले स ही तैनात कई कुडछे पाए ॥  
 जो मोटी रुढ़ाइयों के भी अंतर को हिला सक ऐसे ।  
 तो चम्मच-ब्राड हुजुरों की हो सके वहाँ गिनती कैसे ?



चमचा की मोदन गाए किन्तु दूध दूध बाउ गरीब रहे ।  
 घरघर में गगना घरघर की पीवी व मे मन्त्रीए रहे ॥  
 यह बात माँ के माँगे चमचे । गा वहाँ करो ? ?  
 कारण इसे के मन्त्री बड़े घरघर पीवी म डरी ? ॥  
 चमचा के बाउ मूब जा । जो इनम मित्त है बटमाये ।  
 माँ के माँगिण करो म माँके व माँगिण है जाये ॥  
 चमचा का पं मोरवगामो विरा है मरिमा तब पदम ।  
 बाको तो बाउ रहत है माँके चमचा व है चमचा ॥  
 जो जाका दूध व पनाता है माँके चमचे का गुण करो ।  
 यानी चमचे व चमचा व चमचे व पं म गुण करो ॥  
 चमचापन उम्ह म्मारक है जा घरना पुन म मचा ? ।  
 तुम जिनके चमचा है भाई व भी श्रीरा व चमचे है ॥

४

जो चमचा बनना चाहो तो ए गुस्ता प्रामाणिक मानो ।  
 लो एक भाग डच्छा दसि के-मो चार भाग चाला ॥  
 उससे दूगुनी हाँगे हाँगे, गोगुतो तापूमो लाघो ।  
 मध गोट गरल वर कपड छ न करके जो पुँडिया बनवाघो ॥  
 तिकडमवाजी का गहद मिला यह च्या अगर न पाओगे ।  
 तो कुछ ही दिन म आप एक माँके चमचे बन जाओगे ॥  
 घरघर चमचो को चाहते हैं चमचे हा उ ह पुजात ? ।  
 ये दोनो मने सिद्ध साधक, वात है श्रीर खिलात ह ॥  
 रिश्वत देना हो तुम्ह अगर डाइरेक्ट नही ती जायेगी ।  
 नेहली जाने वाली गाडी रेवाडो होकर आयेगी ॥  
 कलियुग की चलित कुण्डला म इन चमचा ने दिन अछे है ।  
 ये चमचा-युग है इसमे तो केवल चमचे ही मन्चे ह ॥ ❀

# रिश्वत

०००



ईश्वर ने दा दो हाथ दिये लने देने के ही खातिर ।

इतना मोटा मुह वरसा है, खाने पीने के ही खातिर ॥

पर कम ठोक तो कम ठोक देखो तुलसी की कविता ही ।

‘है सब पदारथ जग माही पर कमहीन पावत नाही’ ॥

१

ये कमहीन इम दुनिया म जावन पाए तो क्या पाए ?  
चौरासी लाख यानिया में जाकर आए तो क्या आए ?  
नारद कहते नरदेही में जो रिश्वत से घउराएगा ।  
बह बार बार चौरासी के चक्कर म चढता जाएगा ॥  
रिश्वत ता एक दवाई है जिसक कठो में आती है ।  
मदाग्नि का रोगी भो हा, पावन-शक्ति बढ जाती है ॥  
रिश्वत है सबव्याप्त जग म यह ऐसी गुप्त कमाई दे ।  
तुम भने एक्स र ले आओ आया भी नही दिखाई दे ॥  
ऊपर म सत उन रहते चोटी हत्या ने भी खिलाफ ।  
आजाय पकड म तो निगल, हाथी का हाथी करे साफ ।  
ये दुनिया ऐम लोग को ये ही किस्मत क, चक्कर है ।  
दुक्कडखोरा को दुक्कड है, शक्करखोरो को शक्कर है ॥

४ ग्यारह

जब तक रिश्वत का माग बन्ध जो हल्ला गून् मचाते हैं ।  
 जो हरिश्चन्द्र या धमराज को दू-वाँपी दिखलाते हैं ॥  
 उनको भी रिश्वत दिग्न जाए तो मन्त्रमुग्ध हो जाएंगे ।  
 भई विश्वामित्र मेनका के चक्कर में चढ़ ही जाएंगे ॥  
 बस ज्योही मुठ्ठी गम हुई, मँटर के मँटर बदल जाय ।  
 अ दर को साबुन जो भी हो, ऊपर के रपर बल जाय ॥  
 घर बठ बडे अफमरो का जो तुलसी दल पट्टुचाते ह ।  
 तो सालिग्राम मस्त रहते मिलजुल कर मौज उडात ह ॥  
 रिश्वत के ढग अनेको है, भुक्ना या तनना पडता है ।  
 रिश्वत पान के लिए किसी का चमचा बनना पडता है ॥  
 हो रहा नियम से काम मगर उसको अटकाना पडता है ।  
 सब बातो की है एक बात कुछ तो गटकाना पडता है ॥

बसे भी तो ये कलियुग है इमको भी ह मर्यादायें ।  
 खाने पीने तक की इमम अब बदल गई परिभाषाएँ ॥  
 अब दान का मतलब रिश्वत पीने का मतलब है शराब ।  
 ईमानदार को पीछे से अब लोग, गधा कहते जनाव ॥  
 अब आप गधा बनना चाहो, तो काई बया कर सकता है ?  
 मरने वाला मर सकता है चरने वाला चर सकता है ॥  
 मीका चरने का आया है खा पीकर बकरे बन जाओ ।  
 अब सब भूमि गोपाल जहाँ पाओ उसको चरते जाओ ॥  
 जो नही पकड म आए तो यह मजा लूटते जाओगे ।  
 पकडे भी गये तो सरकारी रोटिया मुफ्त मे खाओगे ॥  
 ऐस लोका क वचन का नारदजी बतलाते उपाय ।  
 जो रिश्वत म पकडे जाए वे रिश्वत देकर छूट जाय ॥

मेरे पडोस मे कभी एक घोसू छोटे व्यापारी थे ।  
 रिश्वत में चलते पुर्जे थे, बसे तो निपट अनाडी थे ॥  
 ठेके पाए, लाइसेंस मिले, जिनको थे रोटी के लाले ।  
 अब हू वे ठेकेदार सेठ घीसा भाई जयपुर वाले ॥  
 बाहू रे रिश्वत का चमत्कार, जो भी इसको अपनाता है ।  
 जब ऊपर से आना होता तो छपर खुद फट जाता है ॥  
 रिश्वत का शब्द कोश थारा जो हो पान की आशा म ।  
 चिठ्ठी म वात नही होती हो वात तार को भापा म ॥  
 अनुबध इशारा मे होत, आखो-आखा में खाय चले ।  
 नना की डैमो मे गरगट-गरगट करते गटकाय चले ॥

यो तरह-तरह को रिश्वत कुछ ऐसे पहुँचाई जाती है ।  
 चुगी चौकी के नुककड पर जैसे चुगी आ जाती है ॥  
 प्रोपर चैनल की रिश्वत म बाबू चपरासी सब आते ।  
 जिनकी बीबिया चमत्कारी बीजी के माध्यम से खाते ॥  
 मत्री हो या आफिपर हाँ वे चमचे सदा पालते है ।  
 चमचे हो चौथ उगाते है, साडा को घास डालते हू ॥  
 सबसे मोटी है वात यही कविया ने उत्तम ठहराई ।  
 है सर्व पदारथ जग माही पर कमहीन पावत नाही ॥





## दल-वदलू

कल मित्रे एक दलबदलूजी हम बोले तुम सिद्धांतहीन ।

दल परिवर्तन करते रहते नीति विहीन, आदर्शहीन ॥

परसा तक तुम जनसघो ये कल ये स्वतंत्र प्रव काग्रसी ।

कल सोशलिस्ट हो सकते हो यह बोलो राजनीति कैसी ?

वे बोने मिथ्यारोपण है हम दल-परिवर्तन नहीं करें ।

हम तो मदद सत्ता दल के सत्ता के साथ साथ विचर ॥

दुनिया में एकमात्र कोई अच्छा है तो सत्ता दल है।  
 बाकी तो सारा कूडा है, कचरा है कोरा दबदल है।  
 हो सोशलिस्ट या रेंडीकल सत्ता का साथ निभाते हैं।  
 जनसघो हो या भगी हो, हम दोनों में मिल जाते हैं ॥

० २ ०

जब दल विशेष की सरकारें गिरने की हालत होती है।  
 तो प्रजातंत्र में एक एक मत की भी कीमत होती है ॥  
 सतुलन हमारे हाथों में चरणों में गिरते हैं प्राणी।  
 खुद मुख्यमंत्री दौड़ दौड़ करते हैं अपनी अगवानों ॥  
 मोटे मोटे नेताजी भी हमको इस तरह फुलाते हैं।  
 ज्या हूठे हुबे जवाई को बेटी के बाप मनाते हैं ॥  
 हम भी अपनी शर्तें रखते और साँठ गठ जो ही जाती।  
 तो राजस्थान लॉटरी, रातों रात हमारे खुल जाती ॥  
 हम नहीं जवाई मामूली, न्युटपुट में नहीं घेरते हैं।  
 हम तो सरकारी जामाता लाखों पर हथ फेरते हैं ॥

० ३ ०

मानो जनमघ का शासन ही और वह भी अतिम स्वास गिने।  
 हम कांग्रेस में मिल जाए डूबे पर तीन बास अपने ॥  
 फिर तोड़ा तोड़ चले जब भी, सौदेबाजी का हो मौसम।  
 जगदा रणधों के साथ, भूलता है अपना भी पैण्डूलम ॥  
 ये बिजनेस बड़ा धुलद रहे, बगले और मोटर कार मिले।  
 अपनी दूकान समेटें तो पगडी में कई हजार मिले ॥  
 शादी तलाक़ दोनों बातें अपनी गीता में हैं समान।  
 इसको छोड़ें उससे मिललें, यह ही सर्वोत्तम है विधान ॥

हम करें सगाई माया से, पर साथ घूमती है प्रसून ।  
 मिस रेखा से दादी होती, मिस रजनी से हो हनीमून ॥  
 अपना तो राजनीति ऐसी, श्रीरों को यही सिखाते हैं ।  
 कइया मे हाथ मिलाने हैं कइयो को हाथ दिखाते हैं ॥

० ४ ०

जब जब भी खतरे में कोई सरकार कही पर होती है ।  
 तो विधायको पर कड़ी नजर उस समय सभी की होती है ॥  
 नत्थ लुहार दो कीड़ी के, मत की कीमत अस्सी हजार ।  
 उनको लेने के लिये जा रहो, मंत्रीजी को फोड़ कार ॥  
 श्री रामनाथ खुद पतले है, दलबदलून में भूल कहा ?  
 कि आज बक बले से आपका किंगकींग-सा फूल रहा ॥  
 नैतिकता को ही रखना था तो राजनीति में क्या आते ?  
 अच्छा हो मंदिर में जाकर के कही पुजारी बन जाते ।  
 इस युग में तो सिद्धांता की जो पूछ पकड़ दौड़े जाए ।  
 दुनिया उनको उल्लू समझे वे बड़े गधे माने जाए ॥

० ५ ०

दल की दलदल में क्या रखा कि घर से जोगी बन जाओ ।  
 अनुशासन में रहते रहते टी० बी० के रोगी बन जाओ ॥  
 वह सकें नहीं सुन सकें नहीं बस घुटने जाते अदर हैं ।  
 ये नेता हैं या पता नहीं कि गांधीजी के बदर हैं ॥  
 दल बदलू सदा तेज रहते दल वाले फोके फोके हैं ।  
 दल वाले सूटे की गाए दल बदलू सांड सरीखे हैं ॥  
 दल वाले सनी पुराने है दल बदलू है लटेस्ट चीज ।  
 दल बदलू अब मुस्टडे हैं दल वाले हैं कोरे मरीज ॥  
 यो कह कर चन ठाठ में जब दलबदलूजी मोटर सवार ।  
 मुह में यों पनायास निकला युगदेव तुम्ह है नमस्कार ॥

□

# बीमा की बीमारी



ए० सी० वरेण्ट जो पकड़ करे तो फौरन भटके से छोड़े ।  
डी० सी० करेण्ट उसको कहते, जो लेकर प्राण साथ छोड़े ॥  
ये बीमा क एजेन्ट सभी डी० सी० करेण्ट माने जावें ।  
जिस पिण्डो की ये पकड़ करे, मानो सण्टासी बन जावे ॥

० १ ०

दम अगर कही मिलने जावें पूछेंगे कुशल क्षेम मगल ।  
छोटो को चिरजीव कहकर, योलेंगे जीवन बने सफल ॥  
पर बीमा वाले जब मिलते बाबूजी को समझायेंगे ।  
क्षणभंगुर जीवन है भाई, पोछे बच्चे दु ख पाएंगे ॥  
कल को तुमको कुछ ही जाये, किसके हाथो मे मरण अरे ।  
यानी ग्राहक के मरने से बीमा का मगलाचरण करे ॥

७ सतरह



एजेण्टो का बश चले अगर कुछ चमत्कार ऐसा लावें ।

कि कम से कम दो चार लोग बीमा करवा कर मर जावें ॥

जिसमे विश्वास बठ जाए तो ग्राहक सरया बढ जाती ।

जितने ज्यादा उल्लू होंगे, उतनी ज्यादा लक्ष्मी आती ॥

कितना ऊचा आदश, नही फिर भी कोई गिनता इनको ।

मुझसे ज्यादा मेरे बच्चो की रहती है चिंता इनको ।

० ५ ०

जो आज आप इ कार करें कल, परमो, तरसो आयने ।

बेशर्म विभूषण है पक्के महीनो और वर्षों आएगे ॥

ये ऐसे पीछे पड जाए, ज्या जि द किसी न पाले हो ।

या तकादगी के हो मुनीम अथवा आर०एस०एस० वाले हो ॥

जो भो चक्कर मे आजाए, उसको पूरा भकभोरगे ।

जितना ही मक्खीचूम कि तू पालिसी दकर छोडगे ॥

हैजा मलेरिया, बवासीर चेचन भी मिटे महामारी ।

जीवन भर साथ निभाती है केवल बीमा की बीमारी ॥

इतनी निश्चित है कटौतिया प्रति माह रकम बट जाती है ।

स्त्रिया मास में एक बार ज्यो मासिक धम निभाती है ॥

छ छ महीना के बडे प्रीमियम देने की नोबत आती ।

तो अथव्यवस्था बिगड जाय और घर की बीमा बिक जाती ।

बीमा की साडी नही मिल, बच्चो की फोस लटक जाती ॥

घर उधारखाते म चरता बाबू की हना बिगड जाती ॥

जो कभी नोन लेना हमको, तो इनके ठाठ दूसरे हैं ।

लेने के बाट हमरे ह देने क बाट हमरे हैं ॥

यो कज आपको लेना है वसे भी रकम आपकी है ।

इस तरह घुमाएगे तैकिन ज्यो पूजो इनके बाप की है ।

बेटो की शादी होनी हो, ऋण नेने की अर्जो जाए ।

ता जब तक लोन मिले तुमको, बेटो के बेटा हो जाए ॥

हो जाय रिटायर कई लोग यह रकम नहीं फौरन आती ।

इसको लेने के लिए टायरो की जूती घिसती जाती ॥

गसा भी होते देखा है कि रकम हाथ आते आते ।

कुछ खुशनसीब है जीवन से ही पूर्ण रिटायर हो जाते ॥

ये प्रीमारी हो सबब्याप्त बीमा होती है नाडी की ।

बगलो, फस्टरियो, बंको की स्कूटर, मोटर गाडी की ॥

यानी सारो नश्वर चोजें, बीमा के घेरे म आती ।

अच्छे मायक हो आप गले तक की भी बीमा हो जाती ॥

कल ही था मेरा ज म दिवस, घर पर बीमा वाले आए ।

आते हा राग छेड डालो, जल्दी से बीमा करवायें ॥

जीवन का कहां भरोसा है मानो कल को ही मर जाओ ।

वचो का ग्याल करो इनके खातिर ही बीमा कर जाओ ॥

मेरी माताजी गरज पडी बीमा वाने पर दात भीच ।

इस वपगाठ पर मरने की बातें करता है महानीच ।

मरने म मजा अगर आए तू मरे तुम्हारा बाप मरे ।  
 है खबरदार जो भाग से इस घर की ओर कभी गुजरे ॥  
 तो मिर को खैर नहीं होगी इस माथे का करना खयाल ।  
 चल भाग यहाँ स बड़ा यहाँ छोपा बनकर बीमा दनास ॥

माताजी सोटी ले आई थीर उनक देव प्रयाण हुए ।

जूता का ल हाथा में बीमा वाले अतर्धान हुए ।

अब कनी रास्त म मिलते मैं कहता हूँ सब आएँगे ।

वे कहते जाने से पहल, सिर का बीमा करबाएग ॥

मन म सोचू मरी अम्मा जसो होव माण मारी ।

तब ही मिट सकती भारत स गेयो बीमा की बीमारी ॥





## (अ) धर्मक्षेत्रे कुर्सी क्षेत्रे

आ गया जमाना कुर्सी का, उसके हृथ्ये का पागो का ।

आमद का और नुनामद का, छोना भपटी के स्वागा का ॥

सजय कहते घृतराष्ट्र सुना । मैं खोलू दिव्य नेत्र अपना ।

अब कुर्सीत्र है कहा आज यह भारत कुर्सीक्षेत्र बना ॥

### श्री धतराष्ट्रोवाच

ह मजय ! "कुर्सीक्षेत्रे में समवेता सकला युयुत्सव  
पाण्डवा कौरवाश्चैव किम् कुर्वन्ति बाधवा"  
सजय बोले राजन् । कुर्सी के चक्कर म वे आए हैं ।  
पाण्डव-पाण्डव म भिडे आज कौरव-कौरव टकराए हैं ॥  
मानव की पूछ नही है अब कुर्सी निर्णायक फेक्टर है ।  
बिन कुर्सी वाले बडे बडे भा सडक छाप इसपैक्टर हैं ।

वे गाली बौठी के तयाव कोई खोकार नहीं करते ।  
 चपरामो तब भी घात तमरा का ध्ययहार नहीं करते ।  
 कुर्सी हाथा से जाते ही इज्जत भी छोड़ पसी जाती ।  
 पैटें बोली पड जाती है, मृच्छा की मोद घना जाती ॥  
 कुर्सी और कतम हाथ से हा तो सीम मारनां भुक् जायें ।  
 तब दस्तम मुस्ताम हा जाय, तूपासी घोड़े रक जायें ।

० - १

कुर्सी की महिमा है अपार जो भा टनको पा जाते ३ ।  
 असवारी दुनिया क गतिर व हो हीरो बन जाते ३ ॥  
 जो किसी जमान के जिग्ज थ, व पासे रह जाते ३ ।  
 बस ईश्वर स दो चार इव ही य नीर रह जाते ३ ॥  
 जो भी कर्मी पर आ जायें, तो पाय जमाना होता है ।  
 तरख्ते से गाद लगा करक गुद का रिपकाना हाता है ।  
 कुर्सी को प्रथम दत है थह प्रतियोगी का मन माफ करा ।  
 अलाउद्दीन बनाना चाहो जलालुद्दीन का माफ करा ॥

कुर्सी म पहन दुबल थ अर दुबलपन का बहा काज ?  
 जो पहन लाल बहादुर ये वे ३ जगजीवनराम आज ॥  
 ये कुर्सी है या व्यवनप्राश ताकत भी हम अमीम लग  
 जो थे किरकाटो पहलवान अर देखो भारत भीम लग ॥

गाली मे खड़े पडते थे घस जावे करम को गोटी ।

कुर्सी पाते ही गाल लगे ज्यो फूलो हुई डबलरोटी ॥

टाग हरिकोतन करती थी, ताकत मे पूरा विराम लगे ।

जो कभी सुदामा ब्राह्मण थे वे आज चदगीराम लग ॥

कुर्सी में रूप छिगा रहता पावर म ही सुन्दरता है ।  
 तुम हो कुरूप पर परम रूप वाला भी तुम पर मरता है ॥  
 काली मिर्चों के पापड सा चेहरा चैचक से भर जावे ।  
 कुर्सी हो तो सुन्दरिया भी तुम पर योछावर हो जावें ॥  
 कुर्सी वाले की कीमत है, दुनिया उसको जय पीलेगी ।  
 जिस जगह क हैया जायेगा राधाए पीछे डोलेगी ॥

कुर्सी छिन जाए अगर गत्री भी तुम पर सुनो नही मरती ।  
 वासी रोटी बन जाओगे, कृतिया भी कद्र नही करती ॥  
 काला पत्थर भी अगर कही कुर्सी के ऊपर आ जावे ।  
 तो मा लगाम मान कर के दुनिया मे वह पूजा जावे ॥

लोगा का ऐसा है उसूल पहले खर्चो फिर उगराओ ।  
 रिश्वत देकर कुर्मी पाओ, कुर्मी पाकर रिश्वत आओ ॥  
 लाखो रुपयो का बजट रहे, हल्के से हल्का खाओगे ।  
 दो चार बप मे दिडला के बेटे पोते बन जाओगे ॥

लेकिन दो नम्बर के खातो मे ही सब हिसाब रखना होगा ।  
 अ दर म खाओ ऊपर से ईमानदार बनना होगा ॥  
 कुर्सी वाले जनमेवी है, लोगो के काम बनाते हैं ।  
 वे तो निर्लिप्त सदा रहते, रिश्वत तो चमचे खाते हैं ॥

### श्री सजयोवाच

हे राजन ! यत्रयत्र कुर्सी है यत्र स्वार्थो भयकर  
 वस तत्रनत्र विजयमस्ति एव नास्ति सशय ॥”

इति कुर्सी पुराण भारतखण्डे नर नारायण यशोगान ।

अतिमोध्याय समाप्त हुवा, केवल कुर्सी ही है महान ॥▷

## कड़के



कड़के वे हैं जो औरों की जेबों का सदा ध्यान रखते ।  
समाविन खर्च से लेकिन अपने को सावधान रखते ॥  
जो मीठी-मीठी बातों में ही स्वाय सलामत कर लेते ।  
उल्टा ही चले उस्तरा पर जो ठीक हजामत कर देते ॥

मित्रों के घर का पसा हो तो सब भूमि गोपाल रहे ।  
जो अपने घर का पसा हो आगे स जै गापाल रहे ॥  
इनके चक्कर में जो जाए हम उनकी व्यथा मुनाते ह ।  
एन मुफ्तखोर मित्रा यानी कड़का की कथा मुनाते है ॥

एक रोज बहुत जल्दी तडके आगये हमारे घर कडके ।

आवाज जोर से दी, निद्रा से जागे हम घबरा करके ॥

मनहूस दिवस है कह देवीजी घुसी रसोई में जाकर ।

दरवाजा खोला शनिश्चरो के घ य हुए दशन पाकर ॥

हम बोले है यह ग्रहो भाग्य लो चाय नास्ता आप करो ।

मन मे सोचा कम्बस्तो तुम चुल्लू पानी में डूब मरो ॥

वे बोले चाय बहुत अच्छी नमकीन विशेष लुत्फ का है ।

हमने सोचा क्यों नहीं रहे आखिर तो माल मुपत का है ॥

हम गये चाय की होटल में, काफो आई अखबार पढे ।

इतने में जाने मे कब कसे कुछ कडके अपनी ओर बढे ॥

ग्रहो गुडमॉनिंग सर', कह कर जो किया जोर से अभिवादन ।

सोचा कि एक रुपये के तो अतकाल का आया क्षण ॥

मन म तो चला मरशिया पर उपर से कहा चाय लाओ ।

पित्रो के अरण समझ उमे सोचा कौग्रो पीते जाओ ॥

उनकी अलबिदा नमस्ते म माना कि छूटे सस्ते में ।

हे ज म ज म के जवाइयो अब कभी न मिलना रस्ते मे ॥'

इच्छा थी कोका-कोला की पीने को हम दूकान चले ।

पर ज्योही बोतल खुलवाई तो लगा कि ज्यो भूकम्प चले ॥

प्रागए आठ कडके फौरन, बोतल सहीद हुई उन पर ।

यो सवा पाच का बिल आया कोका-कोला की गल्ती पर ॥



तुम कभी पान खाना चाहो और ये टिड्डीदल आजावे ।

ता एक रुपये म जाकर के एक पान खाया जाव ॥

जब भी ये कडके आत हैं ता मन म होती है इच्छा ।

पूरी हो चुमी नमाज मुसल्ला आप उठावें ता अच्छा ॥

० ५ ०

घर में कोई बीमार पडे कडक यारो पे जायेंगे ।

उनके घर म विजली रा पखा माग दान से लायेंगे ॥

कडको के मस्ती हो जाये, भीगग यार पसीने मे ।

मुश्किल से बिल्टो छूटेगी जाकर के एक महोने मे ॥

इनका है दाव बहुत सच्चा अपने शिकार म रहे जुटे ।

कुत्ता स पिण्डला छूट जाय कडका स पिण्डली नही छूट ॥

कइया क चरणकमल शुभ है कइया क शुभ होते दशन ।

कडका की पीठ सदा शुभ है जो पीठ दिखावें तो उत्तम ॥

० ६ ०

हो आठपक्ष अथवा परसा या ज म दिवस कोई होता ।

कडकी का सूय गाप क घर से मिला हुवा पक्का योता ॥

इनकी डार्यारयो म अकित सार उत्सव त्योहार रहे ।

जा मित्र बुलाना भूल जाय तो भी कडके तयार रहें ॥

फक्शन हो कोई बडा तो आप विराट रूप दिखलाते है ।

फिर वाल गोपाल लिये दानो कडक और कडकी आते हैं ॥

इनमे सच्ची हमदर्दी है जब नाता आप जोडते है ।

तो इननी पक्को नगन जम-जमातर नही छोडते है ॥

जो कभी यात्रा पर जाए, सब पते ठिकाने याद रहे ।

जिस गाव शहर म पहुँचेंगे, मित्रो के घर आबाद रहे ॥

जब कभी अचानक पड जायें, ऐसे टिड्डी दल का डेरा ।

भौचक्के दोस्त सोचते है, हो गया शनिश्चर का फेरा ॥

दस पद्दह दिन मे भलो भाति जब पूरा धुलाई हो जावे ।

तो इधर काफिने कूच करे और उधर मफाई हो जावे ॥

पर जाते जाते भी कडके मित्रो का धम निभाते है ।

क्या करें किराया नही बचा", कहकर उधार ने जाते हैं ॥

इसलिये आरती करता हू, हे मेरे कडकेश्वर महान ।

मृभक्ता तो माफी बरूशो अब औरो पर होवो तुष्टमान ॥

पहले ता मैं एव ब्राह्मण हू फिर और बाल-बच्चो वाला ।

उस पर महगाई भारी है, कुछ तो सोचो हे गोपाला ॥

दुनिया है बहुत बडी स्वामी, अच्छा हो जगह जगह विचरो ।

है जिमे शनि को महादशा उस घर मे पहुचो शनीश्चरो ॥

अब तो किष्कधा काण्ड करो, वसे ही जीवन खर्चीला ।

तुम को है भक्न बहुत सारे दिखलाओ नई रामलोला ॥

तुम नही दृष्टिगत हो, ऐसी अभिलाषा रोजाना करते ।"

कडके वे हैं जो --- -- ॥



# सारी दुनिया एक तरफ



कानून बनाये पड़े रहे, फरमान निकाले रह जायें ।  
जिसके जूते मे जोर रहे बस उसके पत्थर तर जायें ॥  
जब जूते पड़े तो बड़ो-बड़ो के हो जाते हैं होश तलब ।  
है सारी दुनिया एक तरफ जोरो के जूते एक तरफ ॥

० १ ०

उद्योग अनेको पिछड रहे पर ये गारटी पक्की है ।  
अपना जूता उद्योग तेज जूतो मे बड़ी तरक्की है ॥  
जूतो का रौब सभो माने ये मबमे तेज निकलते है ।  
संसद मे और विधान सभाओ में भी जूते चलते है ॥  
शिक्षा मे भी इनका महत्व विद्यार्थी आत्मसात करते ।  
दीक्षा त समारोहो से ही जूता की शुरुआत करते ॥  
पहले मूछो की साख रही, अब तो उनकी भरपाई है ।  
भारत न आज विदेशा में जूता की साख जमाई है ॥

निर्यात हमारा जोरदार, इसमें 'तो देश विजेता है ।  
 'अमरीका' देता है अनाज पर भारत जूते देता है ।  
 दुनिया के बड़े बड़े पावर, अपने जूते से हिलते हैं ।  
 श्रद्धालु रूसी जनता को भारत में जूते मिलते हैं ॥  
 जूता का घधा जोरदार है नहीं तनिक भी इसमें बलफ ।  
 हो सारी दुनिया एक तरफ जारो व जूते एक तरफ ॥

० २ ०

जूते सब स्थानों पर जात, हम इनको नहीं बदलने हैं ।  
 पाखाने से लेकर खाने तक वे ही जूते चलते हैं ।  
 कहते हैं कोई भिन्ती था, चमड़े के सिक्के चला दिये ।  
 पर उसने भावो दुनिया को तो पाठ अनेका मिला दिये ॥  
 कितनी ही कठिन समस्या हो, हल उसका शीघ्र निकल आवे ।  
 यदि ठीक ठिकाने सही जगह चमड़ा के सिक्के चल जावें ॥

पुलिंग बिचारे पड रह स्त्रीलिंग की शक्ति अपार ।  
 जूते ढीले पड सकते हैं पर जूती होती जोरदार ॥  
 जो पयर दिल अफसर होने अ य त देखे दिखलावे ।  
 चाँदी का जूता पडत हो वे मोम ममान पिघल जावें ॥  
 जूनों की बात मदा फेयर, बाकी बकवास समझलो रफ ।  
 हो मारी दुनिया एक तरफ जोरो के जते एक तरफ ॥

० ३ ०

बह देखो मम मंता जातो कैसे कमे बल खाती है ।  
 आधा जाधें आधो बाह आधो छाती दिखलाती है ॥

य मिस्टर अफनातून दगिय रभा रभा मगिर जात ।  
 इनको भगिन स क्या लेता य ता उद्दय लिय आते ॥  
 जब बढ़िया से जूते उतार जो भी जावे दगन करा ।  
 ता बाबू चम्पतराम जूतिया नकर अतर्घ्यान उनें ॥  
 फिर कुम, रवट, चमडे, गत्त की चि ता कभी नहीं करते ।  
 ये चारी मे पारगत है प्रभु अरवगुन चित नहीं धरते ॥  
 जब आम जुनाव कभी आते तो नेता चाहे लोद करे ।  
 पर फटे पुराम जूतों को कुछ लोग तुरत खरोद करे ॥

इनके भी ठेके होते हैं जो भाव ताव तय हो जाव ।  
 ये विरोधियों की मीटिंग म ठेके पर जूते फिकवावें ॥  
 नेताजी भाषण शुरू करें, ये फेंकेगे उन पर चप्पल ।  
 बेबी-शू फटो हुई जूती, दूटे तलवे ग दे सेण्डल ॥  
 जो इनको भारी रकम मिले तो ये इतना तक करवावें ।  
 कि सभा बोच नेताजी को जूती की माला पहिना दें ॥  
 कोई सा दल, पसो के बल इनसे करवा सकता करतव ।  
 हो सारी दुनिया एक तरफ जोरा के जूते एक तरफ ॥

इति श्री भमनापुराणे शूता खण्डे चर्म चमत्कार कथामा  
 मुक्तमोगी अध्याय समाप्त ।





## मून पर हनीमून

ग्रामस्ट्रोंग, कौलि स, एलिड्रिन गये चन्द्र पर  
हमने सोचा निश्चय रूपराशि लायेंगे ।  
शुभ चद्रिका रजन घवल राका की शोभा  
लाकर धरती पर मनचाही छिटकाएंगे ।  
कामनियो की केशराशि क लिये वहा म  
जूडो मे जहने को रजत पुष्प लायगे ।  
और नही तो वहा सोमरस मिलता ही है  
अमर वनान हम कुम्भ भर ले आएंग ।  
कि तु मिस्ट्रो बॉक्स खुने तत्र हमने देखा  
ये तीनों ही कारे गोते खात आए ।  
धरती पर क्या कमी पड गई इन चीजो को  
जो कि चन्द्रमा पर जाकर के भाठे लाये ।

० २ ०

इन भाठों के लिये, भाट बन भये जगत के  
सब भ्रखवार, रेडियो ने इनको खूब लड़ाया ।  
कई बघाई-पत्र और सदेश अनेको  
भेज-भेज कर इनको देव-तुल्य ठहराया ।  
हमने सोचा लोग अमेरिका के खुश हैं  
इस अवसर पर बढिया-बढिया तोहफे देंग ।  
किन्तु राष्ट्रपति निक्सन न यह फरमाया है  
सारे राष्ट्राध्यक्षों को भाठ भेजेंगे ।

० ३ ०

चंद्र घरातल की भो अब कुछ करो कल्पना  
वहा अनेका चट्टानें ब्रेटर मिलते हैं ।  
ऊबड़ खाबड़ भूमि कई खड़े पहाडियाँ  
नहीं चट्टिका और नहीं तारे खिलत हैं ।  
अ ग मे कोमलकायी कमनीय नारिया  
चंद्रमुखी कहलाने मे नफरत लायेंगी ।  
एचोतानो चेचक चाटी, उबझा-कुचड़ी  
भदो-सी नारिया चंद्रमुखी कहलायेंगी ।

० ४ ०

चंद्र घरातल स यह अपनी प्यारी घरता  
बोस गुना चेदा मे भो लगतो चमकीली ।  
कहो बादला की नीनी चादर में लिपटो  
लग कि जैसे मोई हो दोबशी सकेली ।



सच कहता है इस गुम्दरता पर मोहित हो

देव अक्सरायें भी नाम बदलवाएंगी ।

घरणी-बाला भू नाता, भू मुत्तो, घरित्री,

भूमि किरण या घरा मोहिनी बन जायेंगी ।

० ५ ०

हवा नही है वहा नही उठतो हवाइर्ग

ऐसी गर्मी नही कि ठोस पिघल सकता है ।

इसीलिये अमरीका वालो न यह माधा

शीत युद्ध का केन्द्र चाँद पर चल सकता है ॥

परम सुरक्षित वहाँ सामरिक झुहा होगा

गुप्त रूा से कई गुप्तचर भिजवाएंगे ।

चन्द्र कक्ष व किसी वॉकम ऑफिस में बटे

दुनिया भर की फिल्में आप देख पायेंगे ।

० ६ ०

चन्द्र लोक से लौट आगये जब घरती पर

चन्द्रयात्री शायद नजर नही लग जाए ।

अलग धलग स किसी काच क घर म रखा

बेचारो ने वही विरह के दिवस बिताये ।

उधर पत्निया अपने अपन चाँद सलोतो

के वियोग म रात-रात भर कैसे सोए ?

मून रिटर्न मुझाफिर इधर पडे बेचारे

आपस में मिल मिल कर अपना रोता रोए ।

बाह रे चाद कि तुमने इन चकवा चकवी का  
दूर कर दिया, कालिख यह तब ही घो पाओ ।  
आगे से हर शादो शुदा नये जोडे को  
हनीमून के लिये मून पर शीघ्र बुलाओ ।





## मैं गजों का लोहा मानूँ !

गांधी नेहरू चर्चिल पटेल, ख्रूश्चेव और ब्राइजन हावर ।  
 ये सारे के सारे गजे गजों में होता है पावर ॥  
 कि जो धरती को हिला सके मैं तो केवल इतना जानूँ ।  
 गजापन यानो प्रतनस मैं गजों का लोहा मानूँ ॥

११७

हो जाय मफाया बाना का जब कभी हजामत हो जाव  
 पर रादग के सिर व ममान य कट गल फिर आ जाव ॥  
 वाला को पदावार तुरत जितना चहो काटो इनको ।  
 दिन भर मवारने तेल लगान स फुमत मिलती किमको ॥  
 पर घाय घरातल पर व हैं जिनके सिर दज निखरता है ।  
 जिनके सिर चाद चमकतो है जिनके सिर टाट टपकता है ॥  
 ये लाग भूल स यदि कभा कया सराद कर न आवें ।  
 वह जेगन भर चल जाएगा, पर नही तिडकन ही पाव ॥

बोटल भर तेल चले इनके दो बर्षों तक आसानी से ।  
 साबुन महिनो तक चल जाए सिर धुले जरा से पानी से ॥  
 काले बालो का बल्क धोड इनके सिर कभो न टिक पाए ।  
 नाई सपने म भी अकर इनका मुडन ना कर पाए ॥  
 जूधो का टटा नही इह, फोडो का फदा नही इहें ।  
 कबी, मशीन, उस्वरे आदि बीजो का घघा नही इह ॥  
 फिर बयो कर बोला नही गज वो कीमत को मैं पहिचानू ।  
 गजापन यानी ग्रेटनस— ॥

० २ ०

इतनी कोमल है स्वचा, और चिकनाई जब उस पर छावे ।  
 मक्खी जो टाट मध्य बठे तो फिसल नाक पर आ जावे ॥  
 इनकी कोमलता के आगे नारी के अंग लजाते हैं ।  
 मृदरता में इनके आगे, फूलो के रंग लजाते हैं ।  
 तुम हाथ फर दो सिर पर तो मानो मखमल पर फेर रहे ।  
 मालिस जो करना शुरू करो, जानो फूलो स खेल रह ॥  
 श्रीमान् गजधर के मिर पर यदि बभो मेह बूदे गिरती ।  
 बल्ला इक मदुर रागिनी फिर आठो स्वर मे फटो पडती ॥

हर एक बूद धारा बनती आग पीछे दाए—बाए ।  
 हर तरफ ढाल बहती बूदें जैसे छाते की धाराए ॥  
 गर्मी में टाट तप ऐसे ज्यो राजस्थानी टीला हो ।  
 या गम घडा हो पनघट का या तूबा एक लचोला हो ॥  
 सर्दी के दिन है खतरनाक गजो की नानी मर जाती ।  
 इन सारो चिकनी टाटो पर धारा चवालित लग जाती ॥

## रौबीला चश्मा



जो रौब नहीं बाकी चितवन में या कि गुदगुदे गालों में ।  
जो रौब नहीं पतले अघरो में या घुघराले बालों में ॥  
जो नहीं मिलेगा जुल्फों में दुनिया के किसी करिश्मे में ।  
वह रौब सुरक्षित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे में ॥

० १ ०

अब नहीं जमाना कसमों का जो कई पुरानी रश्मों का ।  
आ गया जमाना सरे आम जो आज हमारे चश्मों का ॥  
तुम किमी वेध में हो चाहे अफगानी हो या ईरानी ।  
बूनन कॉटन या टरेलिन, अचकन हो या कि शेरबानी ॥  
साड़ी हो या सलवार नहीं पड़ता चश्मे में अंतर है ।  
सर्दों गर्मों वर्षात सभी मौसम में चश्मा बेहतर है ।  
यह फशन है यह शोभा है यह सुंदरता है गहना है ॥  
पुलिंग स्त्रोलिंग और नपुंसक लिंग सभी ने पहना है ॥  
यह दुनिया एक नुमाइश है जो इसे देखना चाहो तुम ।  
तो बदल बदल कर लाल हरे काल चश्म अपनाओ तुम ॥  
या रंग रंग के चश्मों में दुनिया रंगीन दिखाएगी ।  
हाए भर में सारा सफ़्टि टेक्नोकलर फ़िल्म बन जाएगी ॥  
चश्मा चुम्बक है कई निगाहों को आकर्षित करता है ।  
चश्मा मूविंग कैमरा है सब दृश्य रकलित करता है ॥  
आँखों का रक्षामंत्री है रक्षा का भार उठाता है ।  
यह धूल धुएँ में धूप और धक्के से आँखें बचाता है ॥  
आधी दुनिया तो इसीलिए हँसती है चश्मे के वया में ।  
जो रौब सुरक्षित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे में ॥

जितने भी हैं रणजीतसिंह चश्मे में भ्राख छिपाते हैं ।  
 जिनके चेहरे पर दिला-लेख वे भी चश्मा अपनाते हैं ॥  
 प्रह्ला ने जिनको भ्राखों के एगल ही गल्ल खींच डाले ।  
 अपनाए चश्मा सभी डड या पीने दो भ्राखा वाले ॥  
 गजों की हल्दी-घाटी को चश्मा ही बनता सीमा है ।  
 इन दंतहीन बेदन्तों की चश्मे बिन बिकती बीमा है ॥  
 कमजोर भ्राख वालों को तो चश्मा ही परम सहारा है ।  
 ये 'चश्म दारण गच्छामि' का रोज लगाते नारा है ॥

क्याकि चश्मा उनसे कहता कि "कलव्य मास्मगम पाथ" ।  
 'त्वम सर्वे धर्माणि परित्यज मामेक शरन वृज' ॥  
 ये अफ्रीकन चेहर वाले काला चश्मा अपनाते हैं ।  
 तो ऐसा लग कि ऐनक में श्री महिषासुरजी घाते हैं ॥  
 क्या रह घोरतें भी पीछे लेडोज फस्ट कहलाती हैं ।  
 मल्बारो में जब बनी ठनी कलियुग की परिया घाती है ॥  
 काल चश्मे में ठुमक-ठुमक जब चल भारतीय सतियाँ हैं ।  
 लगता है इग्लिश महिलाओं की आप कावन प्रतिया हैं ॥

कुछ लाग रात दिन चश्मे को भ्राखों पर छाया रखते हैं ।  
 कुछ जब पढते हैं सिफ तभी बस इसे लगाया करते हैं ॥  
 क्योंकि जो नहीं लगाए तो जाने क्या से क्या हो जाए ।  
 माता सीता को ये सज्जन फिर माला सिन्हा पढ जाए ॥  
 ये पढें भरत को भात और हल्का को पढ जाए हल्का ।  
 जो लिखा खडो पढादें रबडी जो लिखा हवा तो पढें दवा ॥  
 इनकी खुराक है बहुत तज जब भी कुछ पढन लाते हैं ।  
 दो चार शब्द दो चार वाक्य चलते २ खा जाते हैं ॥

ये लम्बी सी गदन वाले पिचके-पिचके गालो वाले ।  
 कुछ बड़े फ्रेम के चश्मे में ये घसी घसी आँखों वाले ॥  
 जो निकल जायं बाहर तो चेहरा काटून दिखलाता है ।  
 शकस वोकलो को फोरन अपना मीटर मिल जाता है ॥  
 ये शुद्ध सुदामा-ब्राड अगर मोटा सा फ्रेम लगाते हैं ।  
 तो फिर लका में रामचन्द्र वाले सैनिक दिखलाते हैं ॥  
 बड़यो के काच बहुत मोटे ऐसा चश्मा जो हम पावें ।  
 तो इधर लगाया उधर सभी नैगेटिव फिल्म नजर आवें ॥

ये चश्मा तो जादूगर है करता जाता अपने वश में ।  
 जो रीब सुरक्षित रहे सदा अपने रीबीले चश्मे में ॥

० ४ ०

श्री ऐनकदास विना चश्मे यदि कभी सडक पर आजाए ।  
 उस दिन की सारी घटना से इतहास एक ही बन जाये ॥  
 वे कभी सडक के पत्थर का दुर-दुर कह कुत्ता समझेंगे ।  
 तो कभी किसी से टकर उसी का अघा कहकर उलझेंगे ॥  
 अपलम्-चपलम से टकर गाल पर चपलम भी पा सकते हैं ।  
 आ रहा सामन बल उसी से मिलने भी जा सकते हैं ॥  
 हो भरत मिलाप वहा ऐसा पुट बॉल आप बन जाएंगे ।  
 जैसे तसे घर पहुँच जाय चश्मे को तुरन्त लगाएंगे ॥

चश्मा आँखों पर आते ही ठुड्डी कुछ ऊंची उठ जाती ।  
 सोना कुछ आप ही तन जाता छल्लों की चाल बदल जाती ॥  
 यो अकड दिखाकर चलते हैं जैसे चिड़ियों में चील चले ।  
 या नई बहू को सास चले या जीता हुआ वकील चले ॥  
 या अकड दिखाते ऐसी ज्यों समुराल जवाई आया हो ।  
 या पद्म विभूषण, पद्म श्री का बिताव कोई पाया हो ॥  
 चश्मे में बीजगणित रहती प्लस माइनस के नम्बर सब में ।  
 जो रीब सुरक्षित रहे सदा अपने रीबीले चश्मे में ॥

## चाय



आगया जमाना बोडी का सिगरेट के मधुरिम गानो का ।  
जदें का भग मवाना का जो सदा सुरगे पानों का ॥  
अव दध, दही, मक्खन, मिथ्री की बातें सदी पुरानी हैं ।  
जो चाय डबल रोटी बिस्किट फशन का बात सुनानी है' ॥

० १ ०

'ओ जागो मेरे प्राणनाथ ओ जागो मेरे जीवन धन ।  
फनी जागे, गाये बोली, गवाला आया नेकर बतन ॥'  
पर क्या मजाल हम जाग जाय गृहलक्ष्मी जब थक जाती है ।  
वह आखिर लातो चाय चाय की प्याली हमें जगाती है ॥  
मैं इसे चाय का युग कहता यह अननो जीवन-घूटी है ।  
हर घर में रोज चाय पीना तो फडामेटल ड्यूटी है ।  
तुम 'शासक-दल या काँग्रेस'के हो सदस्य मेरे प्रियवर ।  
मैं सभी पार्टिया छोड सिफ हूँ चाय पार्टी' का मँम्बर ॥



तुम चाहे बनो मिनिस्टर पर मिलती गाली और दुस्कार ।  
 मुझको मिलती है चाय दूध मेवे मिष्टान मिलें सार ॥  
 श्री चायामृत का पान सकल सुख कर मानवी क्लेश हर ।  
 मधुर मधुर, जिह्वा मधुर, मधुराधिपते अखिल मधुर ॥  
 जब तक जोश्रो तब तक पीम फिरो श्रानो है ना जानी है ।  
 जी चाय डबल रोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

० २ ०

मेरे दादाजी भक्त बड़े जप करत थे गायत्री का ।  
 हम सदा सवेरे भक्ति-पूर्वक ध्यान घर चायत्री का ॥  
 वे राम नाम रस पीते थे हम चाय नाम रस पीते हैं ।  
 व प्रभु-बिनती पर जीते थे हम लिप्टन टी पर जीते हैं ॥  
 टी गल आड या लाओजी बिस्तर पर बठ पाओजी ।  
 तो त्वमेव माता पिता त्वमेव कहकर चाय चढाओजी ॥  
 फिर देखो नोद नदारद है रफकूचकर होतो यकान ।  
 मिरदद उदासी मायूसी, आगे से करतो है सलाम ॥

ये है जुलाम मे एनासिन जी मचले तो अमृतधारा ।  
 यह च्यवनप्रास, यह ब्रह्म-बटो रस भस्म रसायन है सारा ॥  
 नारद कहते नारायण से देवो में चाय चलानी हे ।  
 जी चाय डबलरोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

० ३ ०

जब चाय केतली नृत्य करे कत्यक नतन शर्माता है ।  
 संगीत छेड़ता जब स्टोव पायल का स्वर दब जाता है ॥

यो गीत और संगीत भरी ओठो तक आती है हसती ।  
 होता है पाणिग्रहण बढ़ती अघरा की मादक मस्ती ॥  
 मेरी सरकार गम होती पर मोठी लगती है कमाल ।  
 ज्या कभी बोध में नारो के हो जाय गुलाबो रम गाय ॥  
 जब घाम चलो तो हाथ चली लस्सो का लश्कर ढाय चलो ।  
 शबठ का सर सरकाय चली देशी शराब को खाय चलो ॥  
 लमन विम्टो करते तोबा लो छ्याछ राब को भी गम है ।  
 वन गई चाय डिक्टेटर अब जनरल अयूब मे क्या कम है ॥

० ५ ०

यदि कभी अचानक मेहमानो की टोलो से तुम घिर जाओ ॥  
 और अपनी जान बचानी हो ता इस नुस्खे को अपनाओ ॥  
 लो एक पाव भर दूध चाय में डेढ सेर पानी डालो ।  
 हो काली मित्र जरा ज्यादा, शक्कर का बजट घटा डालो ॥  
 पहला चुस्को के साथ गले म जलन खसखसी आएगी ।  
 अंतिम चुस्को तक पावो में जूती खुद ही चढ जाएगी ॥  
 या आख बचाकर भागेंगे ज्यो पतंग चले बट जाने पर ।  
 जमे मच्छर भग जाते हैं डी डा टो के छिडकाने पर ॥

मैं सिंगल चाय डबल रोटो डालमिया बिस्किट जो पाऊ ।  
 तो "आठहूँ सिद्धि नबी निधि को सुख" बढे ठाठ स ठुकराऊ ॥  
 यह कायो चाय कबीरा को चटता है दूजा रम नही ।  
 इसकी तुलना म चरस और तम्बाखू, गाजा, भग नही ॥  
 मैं कब तक कहता रहू चाय की लम्बी एक कहानी है ।  
 जो चाय डबल रोटो बिस्किट फसन की बात सुनानी है ॥

## इनकी मर्दानी जर्दें में

ये मद बाकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दें में ।  
इनकी मर्दानी जर्दें में ॥

० १ ०

कब्जी की आम शिकायत हो या बदहजमी के हो शिफार ।  
या वात-पित्त के रोगी हा अथवा आतडियो म विकार ॥  
दाँतो मे कीडा पडा हुआ या हाथ पर ठडे रहते ।  
नाडो जो ढीली चलती हो अथवा गमगीन बने रहते ॥  
मत फिरो डाक्टरो के पीछे सस्तो न राह बताई है ।  
ऊपर के रागो क खातिर जर्दा पटे ट दवाई है ॥  
जर्दा है राम-बाण घोषधि रगरग मे चुम्ती खाता है ।  
जर्दा हकीम वोहूमल सा बुढढा में मस्ती खाता है ॥

अजी भूतकाल म कीन भला इन्जैकान लेता देता था ।  
छोटे मोटे रोगो पर तो रोगी जर्दा खा नेता था ॥  
तुम म नही बन सकत हा केवल तलवार चलाने म ।  
मर्दानो का मर्टीफिनेट मिलता है जर्दा खाने मे ॥

हमको जर्दा कडवा लगता खाने वालो को शकत है ।  
 राणाजी को जो जहर लगे मीराबाई को अमृत है ॥  
 जर्दे के गुण अस्पष्ट क्योकि वे छिपे हुए हैं पर्दे में ।  
 ये मद बाकुरे मतवाने इनको मर्दानी जर्दे में ॥

० २ ०

प्रातः उठकर ये मर्दाने जर्दे को प्रथम चवाते है ।  
 दिन के भोजन का उद्घाटन जर्दे के साथ मनाते है ॥  
 बिस्तर पर बैठे बठे ही लगाते जर्दा हथियाने म ।  
 पाखाने स पहले इनको गौरव है जर्दा खाने म ॥  
 जर्दे म सभी विटामिन, ये एनर्जी फूड कहाता है ।  
 शिलाजीत की तरह सुनो मिटो म असर दिखाता है ॥  
 जर्दा जरू से अच्छा है, हर समय साथ म रहता है ।  
 पॉकिट मे दिल पर रहता है मुह म अघरो पर रहता है ॥

वह गोरो है यह केशरिया मोरभ वाला भोना-भोना ।  
 जोरू बिन महिनो काट सकें जर्दे बिन बहुत कठिन जीना ॥  
 पत्नी से ज्यादा सहनशील जब चाहो रौंदो, पुचकारो ।  
 इच्छा माफिक मसलो कुचलो, फटकार हथेली पर मारो ॥  
 पर क्या मजाल उफ करदे जो जीवन लाता दिल मुर्दो म ।  
 ये मद बाकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे में ॥

० ३ ०

जब केशरिया जदा मक्खन चूने का साथ निभाता है ।  
 सब पूछो खाने स पहिले मुह में पानी भर आता है ॥  
 पहन मारू बाजा बजता तब कही जोश तन भ आता ।  
 दो पैमे का मक्खन जदा उससे ज्यादा हिम्मत लाता ॥

जो कहते जर्दा बन्द करो धानिर ये ही पद्यता है ।  
 भारत में दुम्ये से लेकर छम्ये तक जर्दा माते है ॥  
 घोठों के पॉबिट म ग्यों ही जर्दे का पॉबिट जाता है ।  
 उस समय धपर का यह ढाँचा मंमना पॉबिट बन जाता है ॥

जर्दे का रम फिल्टर होकर घोठा व भाग बन्दता है ।  
 जर्दे का रंग निरंतर ही धपने गीतों को रंगता है ॥  
 धपनी धातों को रंगता है चेहरे पर जद पडा देता ।  
 पीला चेहरा, पीला मुनडा, पीला ही मद बना देता ॥  
 पीलापन यानी गौरापन जो गौरा बनना चाहो तुम ।  
 तो प्रमपूषक बद्धा से इम जर्दे को धपनाओ तुम ॥

० ४ ०

वैसे वेदों में लिखा हुआ भिगा स दूर रुदा भागो ।  
 पर सतो को परमीगन है जिससे चाहो जर्दा मांगा ॥  
 जब चाहे हाथ पसार कहो बाबूजी कुछ जर्दा देना ।  
 मिल जाये तो इसा-मत्सा बरना चुपके से सह लेना ॥  
 धालिर जर्दा ही मांगा है, जेवर का चाहा दान नही ।  
 इंसल्ट-प्रूफ जर्दे वाले इनका होता धपमान नही ॥  
 कुछ सदा माग कर खाएगे चाहे जितनो महगाई हो ।  
 जैसे खरीदने को सोग ध गगा के तट पर खाई हो ।

जर्दे का बोढा शानदार मुदरता को सरसाता है ।  
 कवि को जर्दे का पान महा बस इद्र-धनुष दिखलाता है ॥  
 है पान हरा, जर्दा पीला, मुर्ती काली, चूना सफे ॥  
 कत्ये की लाली मिल जाये तो इद्र-धनुष मे कौन भेद ॥  
 धाओ धपनाए हम जर्दा क्यो रहते गोरख ध ध मे ।  
 ये मद बांकुरे मतवाले इनको मर्दानी जर्दे में ॥

## उस्तादों के उस्ताद

भारत में भक्त बहुत मिलते मंगल, बुध शुक्र शनिश्चर के ।  
 उपवास करें, व्रत रखें कथा सुनते कोई पंडित वर से ॥  
 लेकिन इन सबसे श्रद्धा जागरण जो हमको करवाते है ।  
 जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

० १ ०

खटमल प्यारे तुम उस्तादों के भी उस्ताद कहाते हो ।  
 तुम खून चूमने वाली का भी खून चूस ले जाते हो ॥  
 खुजलाघिपते तुम जहा कहीं भी करते हो अपना विचरण ।  
 खुजल खुजने खुजलाने का होता है मुफ्त बहा वितरण ॥  
 जिस होटल में या घमशाल में खटमल जो घुस जाते है ।  
 तो मुसाफिरो पर अनायास ही शमी देव चढ़ जाते है ॥  
 धाराम हराम ममभ्रतर के खटमल उनको समभावत है ।  
 भई सोवत है सो खोवत है जो जागत है सो पावत है ॥

सोए खोए भटक प्राणी को कहता है यह जगा जगा ।  
 टुक नींद से भ्रखिया धोल जरा और अपने रब का ध्यान लगा ॥  
 सोए समाज को कहता यह देखो सोने में बरबादी ।  
 तुम मुझे खून दी मैं तुमको दूगा सोने से आजादी ॥  
 यह कलियुग है अब नए सूतजो सतो-की फेरमाते हैं ।  
 जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

जब बेफिक्री से बिस्तर पर तुम गाये रहने गोपाना ।  
 तो प्रकट कृपाला हो मतवाला गटिया म गटमन साना ॥  
 साही, न्नाठज चुदाट पट सब जगह घाय घुमपठ करें ।  
 भूमि सारी गोपान की है रेगटक घाय घरें विघरें ॥  
 मै खटमल वाली गाटा पर सोने म जाता दू बारा ।  
 बिजली के गमा पर जैसे हा लिगा दूघा कोई मतरा ॥  
 अब कुछ गुजली को घान करें यह अनुभव मोलिक होना है ।  
 सारा परिवार गुज्राए जब यह इश्य अलोबिक होना है ॥

कोई पसली गुजलाय रहा कोई बगलें गहनाय रहा ।  
 मसलें बाह भरते घाह कोई—कोई गर्माय रहा ॥  
 ये बदतमोज खटमल जाने सब कहीं कहां घुम जाते हैं ।  
 जो लोग भुक्त भोगो उनको खटमल की क्या मुनाते \* ॥

यो कई आयकर, विक्री कर मृत्यु कर तक लग जाते हैं ।  
 पर मुरारजी खटमल जी तो सोने पर टक्स लगाते हैं ॥  
 वे स्वण नियंत्रण करते हैं य शयन-नियंत्रण करते हैं ।  
 वे कामराज से डरते है ये काम रात को करते है ॥  
 ये खटमल हैं या नखटमल ये जिनके पीछे पड जात ।  
 तो पिड छुडाना मुश्किल बोमा के एजे ट नजर आते ॥  
 जिस न्यटिया म खटमल रहते पहले से कोई बतलाए ।  
 तो तोसदारखा भी उस पर सोने से सबमुच कतराए ॥

तुम चाहे स्वयं सिकंदर हो लेकिन चपेट में आजाओ ।  
 तो बस राधे गोविन्द भजो बैठे खुजलाते ही जाओ ॥  
 नारदजी अपने अनुभव कुछ कमलापति को समझाते हैं ।  
 जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

० ४ ०

अपनी सीमा में सजग रहे होटल सराय इनका मुकाम ।  
 ये नाइट ड्यूटी करते हैं, आराम लगे इनको हराम ॥  
 है पूरा धर्म-निरपेक्ष आप है जाति-पाति की क्या लगाम ।  
 हर मुस्लिम से अल्ला-अल्ला, हर हिन्दू में है रामराम ॥

खटमल की बिस्मै हैं अनेक है भिन्न भिन्न जिनकी खुराक ।  
 रातों के खटमल से ज्यादा दिन के खटमल है खतरनाक ॥  
 बहिया के खटमल अमर बेल ज्यों खुद ही पलते रहते हैं ।  
 जो एक बार लग जाए तो पीढी तक चलते रहते हैं ॥

भगडे की छाटों पर बैठे कितने हो कानूनी खटमल ।  
 अनपढ़ से डिग्री में ऊँचे कितने डिग्रीधारी खटमल ॥  
 कुछ खटमल में आई हेल्प" कहे पर वैसे तने हुए रहते ।  
 कुछ "सेवक" खटमल जनता के मालिक ही बने हुए रहते ॥  
 राशन के खटमल शासन में सच्चा आनंद मनाते हैं ।  
 भाषण के खटमल जाने क्यों मोटे हो होते जाते हैं ॥  
 हैं कोई गेरुए खटमल जो बैठे-बैठे पा जाते हैं ।  
 जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥





## रसवन्ती



यसे हो जीवा नीरग है क्या अपिऊ उमे बेकार करें ?  
आमो हम मिलकर अपना और भारत का बेडा पार करें ॥

० १ ०

ऐ साकी इन दिलवाला को कुछ दिल का दवा पिना देना ।  
जब मीठा मीठा दद उठ हल्का सा जाम दिखा देना ॥  
जो कहे शराब शराब बहुत यह लग जाए तो डायन है ।  
पर मैं कहता यह फाइन है यह वाइन नहीं डिवाइन है ॥  
यह अगूरा को बेटी है लगूर स्वाद कम जान ?  
जो ब दर हैं इस अदरस को कीमत को कसे पहिचान ?  
कुछ सोचो तो सुरलोक निवासी देव सुरा पीते आए ।  
अपना सुरलोक सुरक्षित है जो मदिरा को अपनाए ॥

जो हो गिलास या बोतल म किम् दत बटाकट कतव्यम ।  
पीने वाले मर्तव्यम् तो खिलने वाले भी मतव्यम ॥  
बिस्की ब्रडो, बोयर तो क्या ठर्रा भी हो स्वीकार करें ।  
आमो हम मिल कर अपना और भारत का बेडा पार करें ॥

ससार सुरामय हो जिनको वे पीते और पिलाते हैं ।  
 'मधुशाला' के पीछे ही तो कितने बच्चन बन जाते हैं ॥  
 क्योंकि मिलती है चलचितवन, पग की थिरकन, दिल की घटकन ।  
 प्यालो चुम्बन, मस्ती का मन, ऐसा शराब का अभिनन्दन ॥  
 चाहे कोई कुछ लिख वाले पीने वालो को फिक्क नहीं ।  
 दिल लखपतियो सा हो जाता छोटी बातों का जिक्र नहीं ॥  
 पीकर हो जाते धुत्त आप जब जाने हाश हवाश लगे ।  
 अपने को समझे राष्ट्रपति बाकी सारी बकवाम लगे ॥

बिडला बागड पिददी लगते, उन बेचारों का क्या विसाद ।  
 ससार भूमता आखो म छोटी मोटी की कौन बात ॥  
 जब आप नशे में धुत्त रह उस समय ताश खेली जावे ।  
 इक्के से लेकर राजा तक वेगम ही वेगम दिखलावे ॥  
 एसे लोगो का 'यथा देव पूजा' में ही सत्कार करें ।  
 आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेडा पार करें ॥

जिस समय भूम कर चलते हैं मन का मयूर या इठलाता ।  
 सडको पर विना टिकट के ही भारत नाटयम होता जाता ॥  
 लडखडा रहे हैं पाव कि ज्यो सकस म रस्से पर चलते ।  
 फिर भी बने स बगबर है, बढ रहे कदम गिरते पडते ॥  
 मुख को आजादी है पूरो धारा चवालिस नहीं बहा ।  
 इसलिए बोलते जाते हैं कौमा या पूण विराम कहा ?  
 जो करे रुबावट थोडी सी तो कम कपाली कर लेते ।  
 हस्तम के चाचा आजाए उसका भी गाली दे देते ॥

तुम कभी अकड़ना नहीं सुने जाओ जो भी ये कहते हैं ।  
 दीवानी और फौजदारी इस समय जेब में रहते हैं ॥  
 इस जन्त देने वाली पर आओ जीवन का वार करें ।  
 आओ हम मिल कर अपना और भारत का बेडा पार करें ॥

० ४ ०

ये तो मस्ती के मौला हैं, जब जब पीकर के चलते हैं ।  
 अपने को नहीं हजारों में लाखों में एक समझते हैं ॥  
 नुक्कड़ पर जो है लम्प पोस्ट उससे लिपटे बोते बाणों ।  
 लेकर चिराग तुम खड़ी रहो कितनी अच्छी मेरी रानी ॥  
 यदि उस नाली के तीर आप काली कुतिया पा जाएंगे ।  
 तो हाथ फेर पुचकारेंगे फिल्मी संगीत सुनाएंगे ॥  
 बोलेंगे कितनी अच्छी हो घर से बाहर मिलन आई ।  
 हर समय ध्यान रखती मेरा ऐ मेरी श्यामा मन भाई ॥

कुतिया बेचारी परेशान पर चाट चूम सहला देता ।  
 इस नए प्रेम अभिनेता को पानी संभवत पिला दती ॥  
 यो लाघव नयनम् नाली शयनम् मस्ती का साकार करें ।  
 आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेडा पार करें ॥

\*\*\*\*\*

## परिवार नियोजन



शीला लीला चुनू मुनू राजेश महेश मुरारी हो ।  
 आधुनिक देवकी आप आठवें बच्चे की तैयारी हो ॥  
 तो होने दा बेचारे को यह जीव जगत सब मिध्या है ।  
 ह अजु न चिंता रहित रहो जो होता मेरी इच्छा है ॥  
 बच्चो का होना ना होना यह तो नियति की सधि है ।  
 पर यहा तीन के बाद अगर चौथा हो ता पात्र दी है ॥  
 क्योंकि चौथा बच्चा होना भारत मे विनाशकारी है ।  
 वह मरप्लस है, बेकार घरा पर भार गरसरकारी है ॥

मानवता के विकास म तो भारत अब्बल ही आता है ।  
 हर तीन क्षणो में यहा एक बच्चा पदा हो जाता है ॥  
 यो एक मिनट म बीस और घण्टे म बारह सौ केवल ।  
 हर साल एक सौ बीम लाभ की बढती रहती है टोटल ॥  
 बच्चे मक्रामक रोग कही य फैले अगर महामारी ।  
 तो चाट जाय कपडे अनाज नैसाई और रोजगारी ॥  
 हमको शास्त्रो के मथन से ही गभ ज्ञान ये प्राप्त हुवा ।  
 अब लूप पुराणे नारी बडे प्रथमोध्याय समाप्त हुवा ॥

मूतजो कहते, हे मुनोदगरा हम घरना जान बनाने है ।  
 जिस जिसने सूप सगाया है हम उाकी क्या मुनाते है ॥  
 बसे तो घब ये बनिमुग है याग बानी हो रहती है ।  
 वेदिया सूप सगाती है मानां जाती रहती है ॥  
 बडिया गो मच्छरदानो उया मच्छर पर गोक सगाती है ।  
 यो सूप सगो उच्छादानो उच्छा म हम बगाती है ॥  
 ये तो फरमाह्य गाना है इच्छागुमार तुम सगवानो ।  
 नकलो पीता की तरह घाग जब पाड़े पूत निरसवानो ॥

यागो ये अद्द विराम चिह्न है पूग विराम न हा पाये ।  
 गुलजा मिममिम ता गुल जाव रुकजा सिममिम ता रुक जाये ॥  
 हम जरा रेडियो गोलें ता घानो उसमें मीठा बागो ।  
 सब लूप लगाने को कहती मत्राणी या बि मेहनरागो ॥  
 ह मुनिया कष्ट निवारण म मवत्र लूप ही ध्याप्य उघा ।  
 अब गभ पुराणे निरोध सडे द्वितीयो ध्याय समाप्त हुआ ॥

कुछ बडे मजे की बात हैं, क्या कहना सूब विचारा का ।  
 छ छ बच्चो के बाप लाभ बतलाते है लघु परिवारो का ॥  
 कुछ मन में सस्त विरोधी हैं, लेकिन सरकारी नौकर हैं ।  
 गुड भा खाते जाते है वे पर कहते जाते गोबर है ॥  
 यो तो यौवन का समय सभी का होता खूब बुल दो का ।  
 फिर भी उपदेश दिया जाता है पुष्पा को नसबन्दो का ॥  
 हम नमब दो मे सहमत है ऐसी हो राय हमारी है ॥  
 आधो शिष्यण्डिया आज महाभारत मे विजय तुम्हारी है ।

भव जो भी आखो वाले है, बच्चो की पल्टन से डरते ।  
 हा जो घुतराष्ट सरोसे हैं सी सी बच्चे पैदा करते ।  
 शादी करवाते पंडित जी शायद ये मंत्र सुनाएंगे ।  
 दा भयवा तीन बहुत अधिक्स्थ अधिक् म पढ़नाएंगे ॥  
 ये मुनियो ये बतरणी है जा यहा नहाया शात हुआ ।  
 नमबन्द पुराणे प्रयोग खडे तृतीयोध्याय समाप्त हुआ ॥

० ४ ०

घर में बच्चो की पल्टन हो कम वेतन म महगाई म ।  
 तो फिर भक्ति का याग बने आसक्ति पडे खटाई मे ॥  
 ज्यादा बच्चा वाला घर में रुखा भोजन ठंडा पानी ।  
 मोटी माला गोपीचन्दन लेने की फिर हरि की वाणी ॥  
 जो उनम कोई कुछ मागे तयार जवाब रहे हरदम ।  
 मगते मे जो मगता मागे जय जय राम जय जय श्याम ॥  
 इस बेकारी मे अगर आप नमबन्दी लूप लगाएंगे ।  
 अवकाश मुपन आराम मुपत ऊपर म स्पये पायेंगे ॥

थोडा सामान तो सुखी सफर थोडा परिवार सुखी जीवन ।  
 जो थोडे बाल रहे सिर पर तो टाट चमकती है चमचम ॥  
 अच्छा हो किसी लोमडो सी जो पूछ आपकी कट जाए ।  
 तो सबको दो उपदेश पूछ भारी है भट्टो दिखलाए ॥  
 है बहिनो जिसने कटवाई उसकी हा गौरव प्राप्त हुआ ।  
 सतोप पुराणे गृहस्थ खडे चतुर्थोध्याय समाप्त हुआ ॥



## बीछे-छाले

मेलेरू के एक सभिया को बुगार था ।  
 डॉक्टर बोला घाव पूरा विश्राम कराओ ॥  
 १०६ दिवो बुगार है, सभिया बोला ।  
 विद्यना विश्व रकाट रग गया, यह बानाओ ॥

० - ०

## प्रमाणपत्र

मैंने पूछा कि मृत्यु प्रमाणित करत ?  
 डॉक्टर बोला इगका मम पहियात यह है ॥  
 हृदय बंद ही तभा घादमा मरता नबिन ।  
 जगान ररत ही घोरत में जान रही है ॥

१२५

## सफल डॉक्टर

एक डॉक्टर को निम्दा दूज म करत,  
 रोगी बोला जत्र वह निमोनिया ठहराता ।  
 सदा गलत अनुमान सिद्ध हो निमोनिया का  
 रोगी कि तु टायफाइड से है मर जाता ॥  
 बहा दूसरे डॉक्टर ने वह उदतमोज है ।  
 मैंने इतने बप बिताये अनुभव करते ।  
 मेरे सारे हैजे के रोगी हैजे मे  
 गारे मलेरिया के मत्रिया से मरते ॥

## माई डीयर

मेरी मृगनयनी, पिकवयनी मेरो मैना ।  
हसावरणी । सुना तनगये उनके नैना ॥  
गेली जीवज-तुओ के ये नाम गिनाकर ।  
सिद्ध कर रहे हो कि मैं हूँ एक जानवर ॥  
“नहो नही, माई डीयर,” तो भी भुलाई ।  
बीबी को माई कहते कुछ शम न आई ॥

० ५ ०

## दो या तीन बस

या प्रचार परिवार नियोजन का जब भारा ।  
तगि वाल ने सोचा घट जाय सवारी ॥  
‘दो या तीन सिफ—बस’ वाला बोड लगाया ।  
तीन सवारी तक ली पूरा लिया किराया ॥  
दो या तीन सिफ चाहे बुढ़े या बच्चे ।  
दुबन—पनने, मोटे ताजे पक्के कच्चे ॥  
मजा उडाया कि तु एक दिन हिम्मत हारी ।  
चार चार मन की आई जब तीन सवारी ॥

० ६ ०

## मत्रणा

‘राग डा गम्भीर बतानो अब तक तुमन  
इम प्रसंग म किस उल्लू से बातें की थी ?’  
डरते डरते गेणी बोला चीराहे के  
श्रीपध विक्रेता ने मुझको सनाह दी थी ॥  
डाक्टर बोला महामूख से करी मत्रणा  
तो अवश्य ही बात बेवकूफी की होगी ।  
जी हा, श्रीपधि-विक्रेता न मुझको भेजा,  
इलाज तुममे करवाने को बोला रोगी ॥



## भिखमगे यजमानो से

### भगवान वचाये

गलती की दे दिया निमग्नण, अपने घर पर ।  
 भोजन करने कोई भोजन भट्ट पघारे ॥  
 चार सेर की पूडो सफाचट्ट कर डाली ।  
 साग पात मिष्ठान, मुरब्बे चटनी मारे ॥  
 मैं बोला स्वामो गरीब हू, कृपा कराओ ।  
 जैसे तैसे भोग लगा कर लाज रखाओ ॥  
 वे बोले जब बुला लिया है तो खाऊंगा ।  
 अब तक रहा रेकाड छोड कर दिखलाऊंगा ॥  
 मैं बोला वह टूट चुका हम हिम्मत हारे ।  
 वे बोले आने दो थोडे शक्कर पारे ॥

मैंने कहा कि नाथ ये बात गोपाल विकल है ।  
 पंडितजी न कहा अभी तो इ टरवल है ॥  
 गुस्से मे आ बोला ऐ पंडित के बच्चे ।  
 उसन कहा कि आने दो रबडी के लच्छे ॥  
 मैं बोला क्या किसी शत पर जा सकते हो ?  
 वे बोले क्या रबडी और मगा सकते हो ?  
 'कितनी ?' 'ढाई सेर कि तु ये भूल न जाना  
 रबडी ताजी हो और लच्छेदार मगाना ॥'  
 हाथ जोड कर माफी मागी कुछ ममभा कर ।  
 एक मेर रबडी के उनको दाम चुकाकर ॥  
 जाते जाते पर पंडित ने वचन सुनाय ।  
 'भिखमगे यजमाना मे भगवान वचाये ॥'

# इसलिए तौंद को नमस्कार

भारत में तौंदन बहुत मिले ये बड़े सेठ ये साहुकार ।  
ये मनेजर, ये डायरेक्टर राजा महाराजा, जमीदार ॥  
ये बड़े मुलिम के अफ्रीसर नेता-भत्री भी वेगुमार ।  
इनमें ज्यादातर तौंदल हैं इसलिए तौंद का नमस्कार ॥  
इमलिए तौंद को नमस्कार ॥

० १ ०

जो देश तौंद वाला का हैं सवत्र वहा पर आनन्द है ।  
हर तौंदवान कह सकता है कि वह साक्षात् गजानन्द है ॥  
इनका है मोटा पेट बात कोई भी हो पच जाती है ।  
पर खतरा यही कि कभी-कभी बुद्धि मोटी हो जाती है ॥  
दिखने में भारी भरकम हैं पर वजन थापका हल्का-सा ।  
वम सिफ एक त्रिबटल यानो सौ किलो या थोडा ज्यादा ॥  
इनका है मोटा पेट सब जगह इनको इज्जत मिलती है ।  
लेकिन ढावा में मुश्किल से ही इहे इजाजत मिलती है ॥

कारण घर म दो चार फुलिक्यो मे हो काम चलाते है ।  
पर कहीं निमंत्रण मिल जाए आखिर भाफी मगवाते हैं ॥  
ये मोदक प्रिय हैं इहे मिठाई मिल जाए तो चरभर है ।  
ये इनका मोटा पेट मिठाई का तो स्टॉक रजिस्टर है ॥  
मुभको तो जब ये मिलते हैं मैं करू दूर से नमस्कार ।  
इनके आगे दुनिया भुक्तो इसलिए तौंद को नमस्कार ॥

कुछ तौदें होती घरमोली नीचे को ठलकी जाती है ।  
 कुछ किन्तु आधुनिक नारी भी जी तनी हुई दिखलाती है ॥  
 कुछ एक तरफो या ऋको हुई ज्यो मधुमक्खी का छाता हो ।  
 कुछ चौड़ाई में है कमास तरबूजा भी घरमाता हा ॥  
 गोलाई में है नूबे सी फूलो है किमी मटकिया सी ।  
 नीचे को बहो-बहीं भूली ज्या मूज पुरानी गटिया सी ॥  
 कोमलता मे है इन्दर सी पडित की हो या मुन्दे की ।  
 तुम इसे दबाओ फूल जाय होती स्पज रमगुलो सी ॥

श्री तौदनाथजी सोए हा धीर नजर तौद पर घटकाए ।  
 तो गोल गोल ये पेट इह दुनिया का ग्लोब नजर आए ॥  
 तस्थि के बल पर बठ हा धीर पत्र कभी लिपना चाह ।  
 तो तौद डेस्क का काम करे कितनी आसानी हो जाय ॥  
 यह तो बस एक नमूना है या कई तौद के समत्कार ।  
 इनके आगे दुनिया भुक्तो इसलिए तौद को नमस्कार ॥

बनियान आप दरजी से ही देकर के नाप सिलाते है ।  
 कारण कि बने बनाये तो मश्किल से ही मिल पात है ॥  
 मिल भी जाए तो फस जाए और रहे तौद क ऊपर ही ।  
 उभरे सोने पर या लगता जम हो चोलो औरत की ।  
 या ता कमनाय औरत ही दो कदम चल थक जाती है ।  
 या फिर मामूम तौद वाली को भी थकान आ जाती है ॥  
 आ जाय पसीना हाँफ जाय, पुट सूख जाय जब आप चले ।  
 फिर बठ जाय फिर हवा करें, क्या खूब नजाकत के पुतले ॥

पानी जो डटकर पिमा हुआ और चलने की नौप्रत आती ।  
तो ढकलक ढकलक हो जैसे अघजल गगरी छलकत जाती ॥  
य गोलाकार तन विस्तारम उदर भार है अपार ।  
इनके आगे दुनिया भुक्ती इसलिए तौद की नमस्कार ॥

० ४ ०

जब दरवाजा म घुस आप तिरछे हो अन्दर आते है ।  
अपनी खटिया को खातो से स्पशल ही बनवाते है ॥  
सोए रहते है आप नाक से बाजा बचता जाता है ।  
और पट घोकनी के समान उठना और दबता जाता है ॥  
जब कभी बदल लेते करवट खटिया की गोमा बिक जाती ।  
चरमर चरमर चू चरमरर कुछ ऐसा करने लग जाती ॥  
जब कभी दौडने लग जाए तो भारी तन स यो भागे ।  
ज्या भस भिडक कर भाग रही मोटर या लोरो के आग ॥

पर मुझको तो उम समय तौद की घिरकन लगती है प्यारी ।  
उस समय तौद क नतन पर मेरी ये कविता बलिहारी ॥  
पलती या सस्ती कुर्मी पर जो आप अचानक बठ जाय ।  
अच्छा हो उसो समय कोई फोटोग्राफर भी पहुँच जाय ॥  
तो पोज अनोखा मिल जाए कुर्सी म अटके उदर-भार ।  
इनके आगे दुनिया भुक्ती इसलिए तौद की नमस्कार ॥

० ५ ०

श्री तौदनाथजी सोए हो तो बच्चे घिर कर आते हैं ।  
और उचक उचक कर तौद स्थल पर चट सवार हो जाते हैं ॥  
फिर कभी गुदगुदी करते है चढते हैं उतरते हैं ।  
नाभी में अगुली डाल घडी में जैसे घाबी भरते हैं ॥

हर तौद सुहानी होती है, हर तौद लुभानी होती है ।  
 उतनी ज्यादा आकषक जितनी अधिक पुरानी होती है ॥  
 यह तौद राष्ट्र की सम्पत्ति या कि धरोहर और अमानत है ।  
 जो इसे सम्हाले नहीं तो फिर हर तौदवान पर खानत है ॥  
 इसलिए राष्ट्र का काम समझ खतरों से इसे बचाते है ।  
 सर्दों में ये मशाल और गर्मी में शिमला जाते है ॥  
 पखों को हवा खिलाते है गडों पर डम सजाते है ।  
 यों पाल पोस कर तौदों को बेचारे कही फुलाते है ॥

देने लग जाए राष्ट्रपति यदि पदवी एक तौद-भूषण ।  
 तो फुला फुला कर तौद बढाए ये भारत का आकषण ॥  
 उस समय अगर ये मिलें करु में और दूर से नमस्कार ।  
 इनके आगे दुनिया भुक्तो इसलिए तौद को नमस्कार ॥

११

## दो मानचित्र

हे विश्वपति !

हे जगद्गुरु !

सौंदर्य-प्रवृत्ति—

दत्त पुन । हे ! विश्व-मित्र

सामर्थ्यवान ।

हूँ नत मस्तक,

तेरे सम्मुख,

नव भारत के हे मानचित्र !

जिस भव्य सरोवर पर

मुक्ता चुनते थे, कभी हजारों हस धवल स्मित से ।

अब उसी घरा पर

शुल्म कुर्मी, व्यभिचारी

ज्यों, महाप्रलय के दिन

घरती पर, रक्त, मास पिण्डों पर

घिर आते हैं,

गिद्ध भुण्ड ।

प्रत्येक दिवस

ललनाओं के

सुट जाते अगणित चीर

विपले-वाग्-वाण

बहनो को, शामद मिल जाते

रक्षाव-घन के

बिन भागे नगदी पुरस्कार ।

श्री'प्रणय-पत्र काम-उक्त

लिखे जाते हैं, निज अग्नि की

शोक । शोक है । महाशोक ॥

नाले, गदले के ढेर, नानियों के समीप

जो यदा कदा सवन पडे रहते हैं

इनके 'पाप चि ह' ।  
 मैंन देखा ।  
 भगवान  
 तुम्हारे घर मे भी  
 गऊप्रो का छद्म रूप धर कर  
 हत्या करते, छत्री भेडियो को ।  
 बुद्ध नगरपति, कुद्ध नगरपिता  
 करते सुधार  
 सैद्धांतिक, वे आदशवान ।  
 समता के युग की  
 जनता मे करते पुकार  
 उनको भी देखा  
 नगर बधुके घर पर  
 करते सुरा पान  
 पूछा—तो बोले  
 समता का युग है'  
 सभी बराबर है  
 शबत पीवो या  
 लो हलका सा 'सुराजाम'  
 'अपनी दृष्टि मे कोई भेद नहीं है  
 मंदिर हो या मयखाना  
 बात वही है ।

## भारत का भविष्य

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है ।

जब भिखमगे भीख मागना पाप समझकर पछतायेंगे ।  
वे अपने धर्म से अर्जित कर ही अपनी रोटी खायेंगे ।  
फुटपाथो पर जिन्दा लाशें नही पडेगी तुम्ह दिखायी ।  
भूख विदा होगी भारत से कूड, कपट जाने वाला है ।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है ।

दान दक्षिणा छोड देश के सब माधु श्रमदान करेंगे ।  
गाव गाव मे घर घर जाकर राष्ट्र प्रेम निर्माण करेंगे ।  
नही मिलेगे तुम्हे सुलफिये चिलम वाज साधु सयासी ।  
भगव कपड पहन देश मे बापू फिर आने वाला है ।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है ।

चम्बल मतलज नहर भाखरा खेतो मे अमृत सीचेंगी ।  
सूखे राजस्थान तुम्हारी धरती माता तब रीभेगी ।  
फल बस ती ओढ ओढनी खेतो मे छम छम नाचेगी ।  
देख गाव की भोली कया लोग कहगे सुरवाला है ।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है ।

भारत का कश्मीर गुकुट है अन्तिम दम तक हम ले लेंगे ।  
पडी जरूरत तो लोगो के फौजी शासन मे खेलेंगे ।  
कमम हम बापू की है हम गोआ को आजाद करेंगे ।  
चला गया अंग्रेज, फास अब पुतगीज जाने वाला है ।

मुझको है विश्वास देश मे ऐसा युग आने वाला है ।

चोरी और डकैती हत्या, जो तस्कर व्यापार करेंगे ।  
अधिक मुनाफाखार देश की फासी पर भूला भूवेंगे ।





## परिवर्तन

हम चाहे तो इस घरती को फिर से स्वर्ग बना सकते हैं।

हमने अब तक इस घरती को  
केवल मिट्टी ही जाना है।  
इस मिट्टी में भारत का  
अभिमान छिपा कर पहिचाना है।

इसकी नदियों का जल अमृत  
कितने मुँहें जिला चुका है।  
खड़ा हिमालय, कितनी बीती  
वातें हस कर भुला चुका है।

कहते थे सोने की चिड़िया  
भारत को कुछ नीच लुटेरे।  
मोमनाथ पर क्या लेने को  
किसने क्यों डाले थे डेरे।

इसका मतलब साफ यही है,  
घाय धान भरपूर यहा था।  
उस युग में यह देश भूखमर  
जीने को मजबूर कहा था।

ये बीती बातें तो क्या, हम फिर से वे दिन ला सकते हैं।  
हम चाहें तो इस घरती को फिर से स्वर्ग बना सकते हैं।

इसके लिए हमें अपना श्रम,  
खेतों को अपित करना है।  
अकमण्य रह कर औरों की  
भित्ति पर अब तक पलना है।

कुछ तो सोचो आखिर हमने  
उस घरती पर जन्म लिया है।  
जिसने दे सबस्व दिव्य को  
बदले में कुछ नहीं लिया है।

दते थे हम दान विश्व को  
 पर लेना हमको यतता था ।  
 कहते हैं इतिहास, मिस्र मग्न  
 इसकी भिक्षा पर पलता था ।  
 वीत गई वे बातें तो क्या हम फिर से ३ दिन ला सकते हैं ।  
 हम चाहें तो इस धरती का फिर से स्वर्ग बना सकते हैं ।  
 अभी नहीं भारत की धरती  
 बूढ़ी पर बुढ़िया भी लगती ।  
 विश्वपति भारत जीवित ता  
 पत्नी कभी विधवा सी रागती ।  
 इसके खातिर हम ज्ञान की  
 फिर से ज्योति जतानी होगी ।  
 अधिक परिश्रम कर बेकारी—  
 के सग भूख भगानी होगी ।  
 हरी भरी भारत की गोदी  
 केवल श्रम ही कर सकता है ।  
 अधिक उपज कर अन देश के  
 सब दुखों को हर सकता है ।  
 क्योंकि हम चाहें तो छू कर पत्थर को पिघला सकते हैं ।  
 हम चाहें तो इस धरती का फिर से स्वर्ग बना सकते हैं ।

## आस्था का स्वर

स्वप्न को साकार करना है हमे ।  
इस धरा से प्यार करना है हमे ॥

आस्थाए हे अभी जीवित सभी,  
मायताए हैं अपरिवर्तित अभी ।  
हम न हार हे अभी उत्थान का—

रास्ता आसान करना है हमे ।  
इस धरा से प्यार करना है हमे ॥

श्रम हमारा व्यथ जाने का नहीं,  
अज्र अचेरा लौट आन का नहीं ।  
आ रही है भोर अब इस रात को —  
कर विदा अभिसार करना है हमे ।

स्वप्न को साकार करना है हमे ।  
इस धरा से प्यार करना है हमें ॥

सो रहे हैं जो उठे आवाज दो ।  
लडखड़ाते चरण को तुम थाम लो ।  
सकड़ो पगडडियों का आज फिर—

खोद कर विस्तार करना है हमे ।  
इस धरा से प्यार करना है हमे ॥

वेगुर स्वर मागते है एकता,  
खोद खाई गाढ दे हम विपमता ।  
एक स्वर गूजे हमारे गीत में—

इस धरा से प्यार करना है हमे ।  
स्वप्न को साकार करना है हमे ॥

## पौरुप-पूजन

मैं प्रण का प्रतिभा का, पौरुप का पूजक हू ।  
मुझ से कभी न, भय का पूजन हो पायेगा ॥

तुम उर का दीवल्य  
अहिंसा से ढक्ते हो,  
वस असमथ विवशता  
ही है क्षमा तुम्हारी  
शांति, सिफ आध्यात्म—  
पुस्तको की शोभा है,  
वहुरा बल ना समझ  
सकेगा व्यथा तुम्हारी ।

मैं खल का बल से उपचार किया करता हू ।  
मुझसे कभी न खल का अचन हो पायेगा ॥  
मैं प्रण का प्रतिभा का, पौरुप का पूजक हू ।  
मुझसे कभी न, भय का पूजन हो पायेगा ॥

किया शक्ति का बहुत  
निरादर सिद्ध हो गया  
है घायल भूगोद  
मोन इतिहास हुआ है ।  
आदर्शों के ये कपित  
स्तम्भ तोड दो—  
अगर हुआ इनसे  
केवल परिहास हुआ है

मैं जन का, जन के जीवन का उद्बोधन हू ।  
मुझ से कभी न मूक समपण हो पायेगा ।  
मैं प्रण का, प्रतिभा का, पौरुप का पूजक हू ।  
मुझ से कभी न भय का पूजन हो पायेगा ।

तुम कल के कल्पित—  
 सपनों पर आज जी रहे ।  
 - - - मेरी लक्ष्य वही है  
 - - - जो कुछ आज हो रहा ।  
 कल कल का कल क्या होगा  
 1- इसका किसे पता है ?  
 । । वतमान किसलिए हमारा  
 - - - आज रो रहा ?

मैं स्वदेश का एक अंश पर बल युग प्रवाह हूँ ।  
 मुझ से कभी न व्यथ - समर्थन हो पायेगा ।  
 मैं प्रण का, प्रतिभा का, पौरव का पूजक हूँ ।  
 मुझ से कभी न भय का पूजन हो पायेगा ।

- - - वजा चुके हम बहुत  
 - - - घु घड़ियों का तबलो पर ।  
 अब मुझको रणभेरी  
 तनिक वजा लेने दो ।  
 बंद करो ये प्रेम कथाएँ  
 - - - फिर लिख लेना ।  
 । । पहले मुझको गीत  
 विजय के गा लेने दो ।

मैं गुण का गरिमा का, गौरव का गायक हूँ ।  
 मुझ से कभी न नट सा नतन हो पायेगा ।  
 मैं प्रण का प्रतिभा का, पौरव का पूजक हूँ ।  
 - मुझ से कभी न भय का पूजन हो पायेगा ॥

## भारत मा का लाल जवाहर

यही कही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ।

जिसकी बाणी मे गीता का  
कृष्ण सदा बोला करता था ।

जिसके उर मे हिन्द महासागर  
हर दम डोला करता था ।

जिसका पौरुष अडिग अटल था  
सत्य शांति का था विश्वासी ।

जिसके दशन को रहती थी,  
संष्टि की आशाएँ प्यासी ।

आशाओं का दीप बुझा तो, धरती का विश्वास खो गया ।  
यही कही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ॥

लपटो को जिसने दीपो की,  
ज्योति के सचो मे ढाला ।

मानव के मूल्यों को जिसने  
सदा सजोकर उर मे पाला ।

जिसकी उ गली को छूते ही,  
स्वयं साज बजने लगते थे ।

जिसकी सेवाओं के आगे,  
सम्राटो के सिर झुकते थे ।

ऐसा साधक सत्य जगा कर, चिर निद्रा में स्वयं सो गया ।  
यही कही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ॥

जिसको खो कर हिम क्या पिघली  
पापाणो के उर पिघले हैं ।

विपधारी सापो के मुख से  
अमृत के द्योते निकले हैं ।

एक सितारा जिस दिन भू से,  
उठ कर नभ की ओर चला तो,  
उस दिन करुणा ही क्या पिघली,  
- कद्रुता का आचल भीगा था ।

जन जीवन का एक चित्तेरा शिव सुन्दरम् आज हो गया ।  
यही वही यमुना के तट पर भारत मा का लाल खो गया ॥



## गीत

मुझे जि दगी से, है बेहद मुहब्बत,  
मगर मौत से भी शिकायत नहीं है ।

समझता हूँ दुनिया वो दरिया है जिसने  
किनारो पे कायम न लहरें रहेगी ।

जहा किरती होगी, घपेड भी होगे  
य मानो की मुश्किल हमेशा रहेगी ।

मगर यह नहीं कि मैं जुल्मो के आगे  
हूँ बुजदिल या दिल म बगावत नहीं है ।

मुझे जि दगी से है बेहद मुहब्बत  
मगर मौत से भी शिकायत नहीं है ।

भुकाया है मैंने सदा सिर बुतो को,  
न डरकर के बल्कि शराफत समझकर ।

मैं तयार हूँ, खू बहाने को अपना  
हुकम पर नहीं पर हिफाजत समझकर ।

मगर यह नहीं कि किसी आदमी को  
परखने की मुझ में लियाकत नहीं है ।

मुझे जि दगी से है बेहद मुहब्बत  
मगर मौत से भी शिकायत नहीं है ।

चला जा रहा हूँ, मैं मस्ती में अपनी  
न मजिल है मेरी ठिकाना नहीं है,

जहा घाम लूंगा मैं परो को अपने  
समझ लूंगा मजिल, ठिकाना यही है ।

मगर यह नहीं राह की मुश्किलो से  
बढने की मुझ में ताकत नहीं है ।

मुझे जि दगी से है बेहद मुहब्बत,  
मगर मौत से भी शिकायत नहीं है ।

## अपराध

है मेरा दोष यही, कि मैं  
सोये मजलूम जगाता हू ।  
जब देख लिया करता हू कि  
पानी से सस्ता खून हुआ ।  
इन्साफी-फर्ज-महज पुष्पक का  
निस्रा हुआ मजमून हुआ ।

शोषक के तबले महलो मे  
जब धिन धिन तक-तक करते हैं ।  
कुछ नाग भूख से व्याकुल हो  
जब पडे सिसकिया भरते हैं ।  
तब शब्दों की मैं चिता बना  
शोषण की लाश जलाता हू ।  
है मेरा दोष यही, कि मैं  
सोये मजलूम जगाता हू ।

जब राजनीति पर चील,  
गिद्ध, कीए भडराया करते है ।  
नकली भिक्को पर चादी के  
जब झोल चढाये जाते हैं ।  
जब जन-जन के विश्वासों की  
बाया कुम्हलाने लग जाती ।  
या जब मानवता सरे आम  
बाजारों मे दिक्ने आती ।  
तब चीख-चीख चिल्लाकर मैं  
बहरों को बोल सुनाता हू ।  
है मेरा दोष यही, कि मैं  
सोये मजलूम जगाता हू ।

जब हो जाता बोधी समाज  
हर घाव कुरीति बन जाता ।  
सत्रामक राग भयानक स—  
सारा ढाचा ही सब जाता ।  
उा घावों पर मक्की, मच्छर  
आ बँठ भित्ति लगते हैं ।  
उम तीव्र वेदना ग समाज के  
प्राण तड़पने लगते हैं ।  
तब मैं समाज के उस गडियल,  
ढाचे को तोड़ गिराता हूँ ।  
है मेरा दोष यही कि मैं  
सीये मजलूम जगाता हूँ ।  
या राष्ट्र नीच को जब चूड़े  
बिल खोद हिलाने लगते हैं ।  
या सापो को कुछ लोग  
भूल से दूध पिलाने लगते हैं ।  
या गधे ज्ञान में पारगत  
समझे जाने जब लग जाते ।  
या जब उल्लू ही अघकार के  
देव समझ पूजे जाते ।  
तब मैं अघो को राह बता  
पथ बटक दूर हटाता हूँ  
है मेरा दोष यही, कि मैं  
सीये मजलूम जगाता हूँ ।

जुलाई '५७

## विस्फोट-

अधिक व्याधि सह चुकने पर अब यही कलम तलवार बनेगी  
उर भोली लेकर धूम गा  
भिक्षा पाने—

जाऊंगा सतप्त घरों पर  
आहो, आसू भर लाने  
उसका बन्ध बनाऊंगा—  
वैभव के सब प्रासाद गिराने  
कीले गाड़ूंगा मैं फिर से—  
मणि मडित सब सिंहासन मे  
देखूंगा कितनी ताकत है ?—  
इन सबके फौजी शासन में

मेरी आहें घब घब जल कर, इन सब का विस्फोट करेंगी  
अधिक व्याधि सह चुकने पर अब यही कलम तलवार बनेगी ।

गरल पिलाया था मुझको  
ओ' कहा अमी है तुम पी जाओ  
मैं भी था मजबूर वक्त उस  
किया यही क्या-याय बताओ ?  
उसी गरल को उगलूंगा मैं  
उमी गरल से उहे गलाने  
जो आग लगाई थी मुझ पर  
वह आग जलेगा, उह जलाने

मेरी हसरत सब पर उनके, खड़ी खड़ी अटहास करेगी  
अधिक व्याधि सह चुकने पर अब यही कलम तलवार बनेगी ।

बहुत खोजता रहा कहीं—  
कोई मुझको मानव मिल जाये  
गया कहीं उस ओर वही—  
मुह बाय मैंने दानव पाये

तभी उठी बितार हृदय म  
ओ समार बाने वाले  
क्यों यही तुम्हारे हैं माय  
दौलत मे "याय मिटाने वाले ।  
मेरी हसरत ही मिटकर नव जीवन का प्रादान करणी  
अधिक क्याधि गह चुका पर अब पटी बलम तनहार बागी ।

२८ मार्च १६

## कुछ ख्वाइया

मिजाजे गम अहले दोस्त मुझे कहते हैं ।  
सबने खश पिया कर, यह सलाह देते हैं ।  
मगर ईमान से कहना, ऐ दुनिया वालो—  
जा नहीं गम, उसे कौन, जरण कहते हैं ।

जो रह चुप तो वो कहते हैं क्या जवान नहीं ।  
कह कुछ इस पे जिगडते हैं कि लगाम नहीं ।  
अजब है हाल 'अरुण' अब दवा करे कोई—  
ये है वो मज कि हिक्मत में जिसका नाम नहीं ।

जलवे तूफान के हमने हजारों देखे हैं ।  
उगलते आग वो पहाड़ हमने देखे हैं ।  
लगा करती है 'अरुण' आग जिनके पानी से—  
मेरी आँखों ने कुछ ऐसे तलाब देखे हैं ।

दद धन के किसी के हम जियें तो क्या यारों ।  
किसी को खा के पेट भर लिया तो क्या यारों ।  
मजा तो जब है अरुण खुद मिटे हो नेकी पर—  
कोई अफसीस नहीं कम जिय तो क्या यारों ।

गदन मेरी छुरी तुम्हारी चना के देखो ।  
बदा हाजिर है, जोर आजमा के देखो ।  
जलू गा मैं क्या 'अरुण' हू किसी जलाने में—  
जो ऐतबार नहीं तो पला के देखो ।

शेर कहता हू मैं सुनता हू मजा लेता हू ।  
इन तरह उम्र की आसान बना लेता हू ।  
काबिले शक मेरे शेर नहीं तो न सही—  
मैं सुखनवर न सही बात तो कह लेता हू ।

मुझे मत सताओ, सताया हुआ हूँ ।  
जवानी में नाहक रुलाया गया हूँ ।  
दिखाते हो मुझको, क्या इन खजरो को—  
मैं खुद मौत के घर से आया हुआ हूँ ।

हमारे सामने बहती हवाएँ रुक जाती ।  
हमारी इक अदा पे, खुद अदाएँ भुंक जाती ।  
मिले हो एक ही दुनिया में 'अरुण' ऐसे तुम—  
(कि) जिसके सामने नजरें हमारी भुंक जाती ।

मार्च '५७

## विवशता

मैं अपनी बीती सुधियो को कैसे भूलू तुम्ही बता दो ।

मेरे हर निर्दोष स्वप्न को  
कटुता की कारा ने घेरा  
मेरे श्वास श्वास पर प्रतिपल  
छाया है यह क्रूर अधेरा  
मेरी नौजा इम सागर की  
लहरो से हर बार लडी है  
जडता को मर्दित करने वह  
भवरो मे हर बार पडी है

मैं अपने इच्छित कूलो को कैसे ढूँढू तुम्ही बता दो ।  
मैं अपनी बीती सुधियो को कैसे भूलू तुम्ही बता दो ।

नव विहान के ये स्वर्णिम क्षण  
मन का शतदक्ष खिला न पाये  
तृपित हृदय की सतृष्णा को  
बरसे घन पर बुझा न पाये  
इस पर भी दूरागत कोई  
पगध्वनि मुझ को हेर रही है  
विगत गीत की धुन पछी बन  
नभ से मुझको टर रही है

मैं अपने इस अदभुत पथ से कैसे लौटू तुम्ही बता दो ।  
मैं अपनी बीती सुधियो को कैसे भूलू तुम्ही बता दो ।

आलोकित करने प्रतिमायें  
मैं पुलकित हो खूब जला हू  
और मूक अचन हित उनके  
बन अथु उपहार ढला हू



विन्दु अचना हाय ! अभागो  
पापाणो को रिभा न पायी  
अभिगापा के मिया मुझे व  
वरदाना को दिला न पायी

मैं पत्थर की य प्रतिमायें बग पूजू तुम्हीं बता दो ।  
मैं अपनी बीनी सुधियों को बसे भूजू तुम्हीं बना दो ।

## प्रलय के घन

सुन रहा हूँ कि, प्रलय के घन गगन में छा रहे हैं ।

कालिमा नीले गगन में,  
ध्याप्त थी, अब बढ़ रही है ।  
विष-भरी पश्चिम दिशा—  
की ओर आधी उठ रही है ।  
एटमी विद्युत् चमक कर—  
कर रही सकेत मानव ।

मौत का पैगाम ले शतान आगे बट रहे हैं ।  
सुन रहा हूँ कि प्रलय के घन गगन में छा रहे हैं ।

टुट्टियों पर अतड्डियों के  
तार कस कर कौन दानव ।  
पसलियों पर अगुलिया रख,  
स्वर मिलाता जा रहा है  
दानवी-लय घेसुगी बन,  
कर रही सकेत मानव ।

दानवी की वीण बन ककाल वजते जा रहे हैं ।  
सुन रहा हूँ कि प्रलय के घन गगन में छा रहे हैं ।

मानवी की माग का सि-दूर ढाने  
हाथ किसका बढ़ रहा है ?  
विश्व मा की गोद की  
सूनी बनाने ।  
क्योंकि मुझको दिख रहे हैं  
भाडियों की ओट में कुछ ?

भेडिये तू खार, मानव को चवाते जा रहे हैं ।  
सुन रहा हूँ कि प्रलय के घन गगन में छा रहे हैं ।

आसमा क्या मोन हाएर,  
 देखत हो दत्य लीला ?  
 फट पडो घरती तही में  
 चाहता हू और जीता  
 क्योनि मुझ का ये चित्तान  
 कर रही सवेत मानव  
 अनविदा हम तो तुम्हारी छाड दुनिया जा रहे हैं ।  
 चुन रहा हूँ नि प्रलय क पन गगन म छा रहे हैं ।

२३ सितम्बर ५६

## अतीत की याद

विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ

स्वप्न था वह अत्र न उसको

सत्य में परिणत करो तुम,

सामने मेरे अपरिमित को

पुन परिमित करो तुम।

धाम पाया हूँ कठिनता से कगारो मे समन्दर —

अब न मेरे शान्त सागर मे नया तूफान लाओ।

विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ।

अत्र नही ऊषा गगन मे—

रात है वाली सिहायी।

झुंड रह हैं फूल, तारे —

अनमने देते विदाई।

रोत्र पाया हू, कठिनता से हृदय की पीर रोकर

अब न मेरे सामने गायक मिलन के गान गाओ।

विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ।

वन गये वे दिवस मेरी—

जिन्दगी के अब सहारे।

और वे अभिशाप लख

वरदान से मैंने बिसारे।

सीख पाया हू कठिनता से जहर के घूट पीना—

तृप्त हू मत बाध्य कर अब और यह अमृत पिलाओ।

विगत जीवन के क्षणो विस्मृत हुए, मत याद आओ।

तुम दिलाते याद वीती—

बात कह कर, 'तुम वही हो'

मन बताता, तन वही पर

तुम नही 'जो थे' वही हो

भूल पाया हूँ, कठिनता से स्वयं को मैं नशे में ।  
छोड़ दो मुझको नशे में, होश में मुझको न लाओ ।  
विगत जीवन के क्षणों विस्मृत हुए, मत याद आओ ।

मानता हूँ कि अधूरी ही—

रही मेरी कहानी ।

मानता हूँ सिसकती —

रोती पली मेरी जवानी ।

समझ पाया हूँ कठिनता से अधूरे इस जगत को

वह अधूरी ही कहानी मत मुझे फिर से सुनाओ ।

विगत जीवन के क्षणों विस्मृत हुए, मत याद आओ ।

## दुर्दशा

तुम जितना घर को बाहर से पुतवाने हो  
उतना ही भीतर कल्मष बढ़ता जाता है।

इस घर को ईश्वर का—  
घर लोग सगभते थे।  
हर रहने वाला इसमें  
पूजा जाता था।  
इसके ज्योतिर्मय थे—  
आलोकित सभी ब्रह्म।  
इसका हर कोना  
स्वर्ग बताया जाता था।

इसके आगे पीछे  
गरिमा की सरिताएँ  
बहती थी मयूर गनि में  
कुछ सकुचाती सी।  
अब जहाँ स्वान रोने हैं  
दिन में चीख चीख,  
उस जगह वेद की ध्वनि  
कानों में आती थी।

तुम जितनी राहें नई हमें दिखलाते हो  
उतना ही पथ बटकाकीण हो जाता है।  
तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो  
उतना ही भीतर कल्मष बढ़ता जाता है।

लेकिन अब देखो क्या  
होता है इस घर में ?  
कर रहा अब घेरा राज्य  
यहाँ आजादी स।  
बन गयी उल्लुझों की

हर होली दीवाली ।  
 जन जीवन लडकर  
 जीता है बरवादी से ।  
 है लीन मकडिया  
 उल्टे जाल विद्याने में,  
 निर्दोष पतंगो को  
 उसमें उलझाने को  
 भिगुर चिल्लाते हैं :  
 ची ची कर जगह जगह,  
 बरों के छातों को  
 फिर से भडवाने को ।  
 नर रक्त यहा के पिस्सू  
 पानी सा पीते,  
 हर चेहरा दिन प्रति दिन  
 पीला होता जाता ।  
 क्या कहे तुम्हारे  
 अनुशासन की और भला ।  
 जब घर मे आकर  
 गीदड बच्चा ल जाता  
 तुम जितने गड्डे ऊपर मे भरवाते हो  
 उतना ही भीतर पोलापन बढ जाता है  
 तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो  
 उतना ही भीतर कल्मष बढ़ता जाता है ।  
 कर रही विन्लिया ।  
 दूध दही का देख यहा  
 सेता की रसवाली  
 पशुचर कर लेत हैं ।  
 अपन काटा की जेरा  
 को य हाथ सभी,  
 भनजाते ग ही भूल  
 यहा भर नेन हैं ।

हैं वफादार कुत्ते ऐसे  
 जो चोरो को,  
 खुद दौता देते हैं  
 आ झूट मचाने को ।  
 इस घर के दीपक  
 आतुरता से सोच रहे  
 इस घर को अपने हाथो,  
 आग लगाने को ।  
 माना घर की दीवारें  
 है मजबूत मगर ।  
 भीतर की ईंटें तो  
 आपस में लडती हैं ।  
 इस घर की नीवों में  
 चूहे बिल खोद रहे  
 सापों की बई टोलिया  
 निभय फिरती हैं ।  
 तुम जितनी बाहर  
 फली आग बुभाते हो ।  
 उतना ही घर में  
 ताप-प्रबल हो जाता है ॥  
 तुम जितना घर को बाहर से पुतवाते हो  
 उनना ही भीतर कल्मष बढ़ता जाता है ।

इस घर में मुझ को जन्म दिया,  
 मैं पला यहाँ खेला कूड़ा हूँ  
 अन्न यहाँ का खाया है ।  
 इस घर में रहने वाले के नाते मैंने,  
 जो देखा, सोचा, समझा, सो बतलाया है ॥



## श्राज की सीता का हरण

आ बात दशेरे रे दिन रो,  
 म्ह रावण जगतो देख्यो हो ।  
 पाद्यो आ रोटी खाई ही,  
 साउणःन आटो होर्या हो ।

वी दखत फेर आयो खयाल,  
 ओ रावण बयू हर साल जळ ।  
 उत्तर मिळिया वी पापी रो  
 ओ दम्भ और अभमान वळ ।

आ बात सोचते माचे पर  
 म्हारे ऊपर आची, फिरणी ।  
 सुपने मे मैं के दखू हू, के -  
 बठे राम री सभा जुडी ।

बठा हा राम सिंला भाये,  
 लिछमण जी जमी कुरेदा हा ।  
 हनुमान हाथ जोड्या ऊभा,  
 गगद जी लफ गयोडा हा ।

भगवान कह्यो मैं सीता ने  
 लडकर कानी लेणी चावू ।  
 मैं वी पापी री कुरद काढ,  
 सदगुद्धि वस देणी चावू ।

आ बात सुणी सँ जोप्रा रे  
 ऊपर सरताटो सो फिरगयो ।  
 लिछमण बोत्यो कोनी  
 लेकिन दो हाथ जमी मैं  
 वो घसग्यो - - -

सगळा मन मे आ सोचे हा  
अव कियों राम ने समझावों  
बी रावणिये स्पू लडचा विना  
सीता पाछी कूकर लोंवा ।

जद जोघो बोल्यो जामवत,  
कोर रोणे स्पू सुणे राम—  
सीता पाछी ना आवेली,  
आ रही सही इज्जत थारी,  
सँ मिट्टी मे मिल जावेली ।

क्यू के सीता जद गरळावे  
रावण वाने समझावे है ।  
सीता ओ राम दूसरो है,  
ईन लडनो कोनी आवे ।

जे तू म्हारी होवे सीता,  
जीवण रो सुख तू भोगे ली ।  
जे गई राम रे साथे तो,  
भूखी जगळा मे डोले ली ।

है राम खने खाली ताकत,  
भापण री अर उपदेशा री ।  
वो कोरी चिठचा लिख जाणे  
लका है वीर नरेशा री ।

पण थे म्हारी अव सुणो राम,  
थारी सेना ने तयार करो ।  
रावण लटने आवे जिस  
थे पला बी पर वार करो ।

हनुमान वीर सुग्रीव पुत्र,  
रण वका साथे है धारे ।  
चालीस कोटि बानर सेना,  
चढ़गी तो स राखस भागे ।

सैं जामव त री ज बोली,  
जोधो सगळा ऊभा होग्या ।  
आ यात समझग्या रामचंद्र  
लडने खातिर राजी होग्या  
श्रे वात्या मुण रुघनाथ कहघो वो पापी नरक सिधावेलो  
तू चिंता मत कर जामवत वो दिन जल्दी ही आवेलो ।

अप्रैल '६३

## आशका

इम ठडे से उदित सूर्य से जाने कैसे ?  
नभ मे फला दूर अधेरा हो पायेगा ।

कैसे ढीले तारो पर,  
स्वर सध पायेगा ।  
कैसे वौनी भावुकता  
नभ छू पायगी ।  
कैसे चू कर मधुमय  
ये अमृत की बू दे ।  
विष के सागर का  
परिवतन कर पायेगी ।

इस निर्मल चंद्रा की भोली चंद्र द्युति से,  
कुटिल-कुचाली राहु कसे छला जायेगा ?—  
इस ठडे से उदित सूर्य से जाने कैसे ?—  
नभ म फला दूर अधेरा हो पायेगा ।—

आज सुभद्रा का सुत  
व्युह मे फमा हुआ है ।  
सिफ शिखण्डी से  
बाहर ना आ पायगा ।  
भीम बढो आगे—  
अजु न गाडीव सभालो ।  
रधे बठ से शायद,  
शख न बज पायेगा ।

दगान के इन उपदेशो से जाने कसे ?  
दुर्योधन का अहकार क्या गल जायेगा ।  
इम ठडे से उदित सूर्य से जाने कसे ?  
नभ म फला दूर अधेरा हो पायेगा ?

दुग है गगा यमुना की  
 पावन भूमि पर ।  
 पानी के दुग से  
 हर पीषा मूत्र रहा है ।  
 दुग है, हर दीगा  
 मिश्रण का तेज मांगता ।  
 दुग है मागी स्वयं  
 विचारा भूल रहा है ।

मुनो साधियो तीनाघो के पाल बदल ना  
 तूपागो का दाब स्वय ही बन जायगा ।  
 इस ठडे से उदित मूत्र से जान कस ?  
 नभ मे फला दूर अंधेरा हा पायेगा ?

अणर स्वप्न ही रहे,  
 दम्ते सान वासा ।  
 ता स्वर्णिम यह रात  
 रूपते बल जायेगी ।  
 लुट जायेगा भाग्य  
 नवेली इम दुलहिन का ।  
 श्रम से निर्मित मह  
 तस्वीर बदल जायेगी ।

मवलन की चोटो से कस पाषाणा का  
 सड-सड हो चूर घरा पर बिछ जायगा ।  
 इस ठडे से उदित मूत्र से जान कसे ?  
 नभ मे फला दूर अंधेरा हो पायेगा ?

१३ सितम्बर ६५

## डोलती नौका

यह नाव न छू पायेगी, कभी किनारो को ।  
जब तक इसका यह पाल न बदला जायेगा ।

इसके पेंदे को श्रव भी घुनती है दीमक,  
जो जानमूँकर, स्वयं नाविको ने पाली ।  
भर दिया विदेगी माल, मूर्खों ने इतना—  
यह चल न सके, इतनी बोभिल है कर डाली ।  
ये सड़े गले शहतीर तन्त्रिया फटी हुई,  
क्या करें, भरोसा, ये उस पार लगा देंगे ।  
जो स्वयं कापते हैं अपनी ही घड़वन से,  
वो कैसे तूफानो से हमे बचा लेंगे—?

यह नाव न लड पायेगी, क्रूर थपेडो से,  
जब तक इसका मल्लाह न बदला जायेगा ।  
यह नाव न छू पायेगी कभी किनारों को,  
जब तक इसका यह पाल न बदला जायेगा ।  
कर रही सधिया लहरें गुप्त हवाओं से,  
उद्वेलित करने, फिर से सागर के जल को ।  
चिनगिया भटकती हैं, पगली-सी इधर उधर,  
बहका कर भडमाने फिर से बडवानल को ।  
बसे पतवारें हैं मजबूत मगर इनके—  
हाथो मे पहले था, वसा अब जोश नहीं ।  
वो चट्टानो से हमे बचायेंगे कसे—?  
जिनको शराव मे खुद अपना ही होश नहीं ।  
यह नाव न लहरो का उर चीरेगी तब तक  
जब तक इसका हर साज न बदला जायेगा ।  
यह नाव न छू पायेगी, कभी किनारो को  
जब तक इसका यह पाल न बदला जायेगा ।

## पंडौसी को पत्र

भारत की इस आय धरा पर बढ़ने वाली  
खबरदार आगे बढ़ना कुछ सोच समझ के  
अब तक तो तुम इन परो से गिर पडते थे  
आज तुम्हें इन परो पर अभिमान हो गया  
अभी प्रगति के पथ पर तुम दी कदम चले हो  
समझ लिया कैसे तुमने अभिमान हो गया  
आस्तित्व के साधो तुम कैलाशपति के  
वक्षस्थल पर आगे बढ़ना कुछ सोच समझ के  
तुम अफीम में ऊध रहे थे भूल गये क्या ?  
यह सारा ससार तुम्हें दुत्कार रहा था  
मैंने गले लगाया तो तुम फूट पडे थे  
केवल पचशील तुमको पुचकार रहा था  
मगर सुनो हम लोहे के हैं चने इसलिए  
खाने की आगे बढ़ना कुछ सोच समझ के  
हमने तुमको मित्र समझ सम्मान दिया था  
जब तुम भेदी बनकर इस घर में आये थे  
कहा गया वे गीत चीन के आदर्शों के  
गाये थे तुमने जब तुम छलने आये थे  
भारत का विश्वास उठ गया अब तुम पर मे  
औरो की छलना अब तुम कुछ सोच समझ के  
जैसे हम आदर्श दोस्ती के कायल हैं  
वैसी ही दुश्मनी निभानी भी आती है  
जहाँ मित्रता पर हम जान निछावर करते  
जान हथेली पर हमको रखनी आती है ।  
इसलिए दोस्त से दुश्मन ही यदि बनना हो तो  
मौल दुश्मनी हमसे लेना साच समझ के ।

४ अक्टूबर ५६

## चेतावनी

दुःसाहसों व अरे अधेरे तनिक ठहरूँ तू  
विश्वासों का सूय उदय होने वाला है ।

भस्मासुर के सुनो वशजो कान खोलकर—  
अत्र मेरे शिव को छलना आसान नहीं है ।  
सीमा की सीता को छाने छद्मवेशियों—  
मत आना अब पहले वाला राम नहीं है ।

वफ हिमालय की अब ठण्डी नहीं, गर्म है  
इतनी कि इसके कण कण में धाग भरी है,  
सागर की लहरें अब शांत नहीं रहने को,  
प्रतिकारों की अस्तमत्तल में ज्वाल उठी है ।

अमर ज्योति यह बुझने वाली नहीं पतने  
तेरे पक्षों का विनाश हाने वाला है ।

तुम मेरे वस शांत रूप से ही परिचित हो ।  
जब मुझको प्रलयकर रूप दिखाना होगा ।  
अमृत की मनुहारों मेरी तुम्हें न भायें  
अत्र मुझको विष बरबस तुम्हें पिलाना होगा ।  
जहा कहेया की मीठी बसी बजती थी  
रणमेरी के सग वहा अब विगुल बजे ॥  
तन, मन धन सबस्व समर्पित कर स्वदेश को  
भारत के घर घर में सनिक कीर सजेगा ।

अभिशापित-अभिमान दम के दर्पें ठहरूँ तू  
देवासुर सग्राम यहा होने वाला है ।



अगर नहीं विश्वास खोल इतिहास देख लो  
हर पत्थर हमसे टकराकर गल जाता है  
जो भी काटा चुभा हमारे खाक हो गया  
माकर हर तूफान यहा पर ढल जाता है ।

1  
पापों के परिणाम भुगतने तनिक ठहर तू  
तेरे घर मे महाप्रलय होने वाला है ।  
दु साहसों के अरे अधेरे तनिक ठहर तू  
विश्वासों का सूय उदय होने वाला है ।

## मैं सिपाही हिन्द का हूँ

मुल्क की तौहीन मैं बरदास्त कर सकता नहीं ।  
दुश्मनो की दश मे मैं सहन कर सकता नहीं ।  
आजमा लेना सिपाही हिन्द का हूँ दुश्मनो,  
बढ़ गया आगे तो पीछे हट कभी सकता नहीं ।  
जान को रख कर हथेली पर लडा करता हूँ मैं ।  
सामने शैतान हो तो भी अडा करना हूँ मैं ।  
रग दिया करता हूँ घरती दुश्मनो के खून से,  
जब कभी दुश्मन की छाती पर चढा करता हूँ मैं ।  
उस समय देशक सिक्-दर भी अडे तो तोड दू ।  
वाजुम्रो के दम पे मैं दुश्मन के लश्कर मोड दू ।  
मौत का क्या खौफ मुझको मैं सिपाही हिन्द का,  
सर पे बाधे मैं कफन लडता हूँ जिंदा मौत से ।  
गडगडा जब गरजती हर तोप हिन्दोस्तान की ।  
दुश्मनो की टोलियां हो डेर उडती राख-सी ।  
हर सिपाही हिन्द का हुकार कर जब गरजता,  
दूर कोसो तक नजर आती प्रलय की आग सी ।  
हम वतन के वास्ते बाजी लगा कर जान की ।  
है कसम हमको हमारे हिन्द के अभिमान की ।  
गर उठाई आख तो, हम भर मिटेंगे देश पर,  
फख्र है हमको हमारे हिन्द के अभिमान पर ।

युद्ध-का देवता- ।

मरने की तो मरे सभी, पर ऐसी मौन नहीं आती है ।

वेशक जो, अपनी माता का,

इकलौता हो वेटा प्यारा

चाहे अपने वद्ध पिता की

आखो का हो एक सितारा

चाहे छोटी बहन बधु बन

उस घर से जाने वाली हो

चाहे भाई की जल्दी ही

शादी घर होने वाली हो-

अथवा च दो सी पत्नी जो

अभी अभी गीना कर आयी

अपने पूज्य देवता की जो

अच्छी तरह देख ना पायी

पर आवाज देश की सुनकर

घर के रिश्ते सभी भुलाता

इतना रहता याद उसे

चल सैनिक तुम्हको देश बुलाता

और सभी को छोड़, देश की -

सीमाओं पर वह आ जाता

जूझ दुश्मना से रण म वह

वीरोचित कर्तव्य निभाता

उसे नहीं परवाह भूख की

उसको नहीं प्यास की इच्छा

इतना रहता याद उसे कि

सैनिक तेरी आज परीक्षा

प्राज युद्ध में चाँहे उसका—  
सारा तन छलनी बन जाये  
पर दुश्मन को दख सिंह-सा  
वो गरजे हुकार लगाये ।

वो देखो उस ओर गया वह  
जिघर दुश्मनो की टोली है  
हथगोली को फेंक जला दी  
दुश्मन की जिसने होली है

भीमकाय पेटन टैंको को  
बड़े गव से जिसने तोडा  
दुश्मन के बम्बार लडावू,  
ज्यो कागज का पूत मरोडा

तिल तिल भर जमीन के खातिर  
आगे बढ़ता खून बहाता  
घायल है फिर भी दुश्मन से  
कभी नहीं दिल में घबराता

आज मृत्यु भी आ जाये तो  
उमसे भी वो करे लडायी  
दुश्मन के सीने में जिसने  
आगे बढ़ सगीन गडाई

भारत का यह वीर अकेला  
उधर सैकड़ो खडे सिपाही  
उसे अकेला दख, दुश्मनो की  
सेना आगे बढ़ आयी

घट्टहास कर, बढ़ा, दौडकर  
। एक तोप का गोला फेंका  
लाशें विछी सैकड़ो दुश्मन—  
की उसने आखी से देखा

बोल उठा जय मातृभूमि हे !  
मैंने अपना फज निभाया ।  
श्रव जाये तो जा सब ती है,  
यह माटी की मेरी काया ।

इसका मोह नहीं है मुझको  
आज नहीं तो कल जायेगी  
मरू देश के लिए घड़ी यह  
जाने कब फिर से आयेगी

नमस्कार है ज-मभूमि को  
जिसने मुझको ज-म दिया है  
नमस्कार हर खेत खेत को  
जिसने मुझको बडा किया है

नमस्कार है तुम्हें हिमालय  
नमस्कार गुगा के जल को  
नमस्कार मेरे भारत की  
पावन माटी के कण कण को

अगर मिलेगा ज-म, लौटकर—  
इसी धरा पर फिर आऊंगा  
मेरे प्यारे देश तुम्हें मैं  
सचमुच भूल 'न पाऊंगा ।

इतना कह सो गया धरा पर  
वही तभी लोहू की धारा  
श्रव निश्चल था अजर अमर वह  
जन्तों ज-मभूमि का प्यारा

ऐसे वीरों की गाथाएँ घर घर रोज सुनी जाती हैं ।  
मरने को तो मरे सभी पर ऐसी मौत नहीं आती है ।

## दुनिया का बाजार

दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जो ले लो

दुनिया में बाजार आपने  
देते होंगे कई तरह के  
माल जहाँ बेचा करते हैं  
सेठ दलालों के बूते पे ।  
बात-बात में बसम राम  
भगवान घम की खाया करते  
श्रीर दलाली के कारण  
कुछ लोग खड़े ठगवाया करते ।  
आये दिन इनको मिल जाते  
भूले भटके ग्राहक ऐसे,  
चमकीला कुछ तडक भडक का  
माल दिखा ठग लेते पैसे ।

यह कह करके कि सस्ता, सुंदर माल बिकाऊ है जो ले लो,  
दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जो ले लो ।

है मंदिर में भगवान बिकाऊ  
मस्जिद में हजरत बिकते हैं  
चर्चों में सूली पर ईशा,  
पोपो के हाथों बिकते हैं ।  
ले लो बाबू स्वयं मिलेगा  
खुदा, खरीदो सुख पाओगे,  
ईगू के अनुयायी, बनकर  
सीधे जन्नत में जाओगे ।  
माल एक-सा बेच रहे हैं,  
लेकिन लेवल ट्रेड मार्कि  
तीनों के ही अलग अलग हैं,  
मंदिर, मस्जिद, चर्च मार्कि

माल, विफायत से दे देंगे, सभी कह रह हम से ले लो  
दुनिया का बाजार खुला हर चीज प्रिकाऊ है जी ले लो

दुनिया कहती इसे कचहरी,  
मैं कहता हूँ मारकेट है  
सील चद सरकारी लेबल,  
मुहमागी ही फिक्स रेट है ।  
यह धमराज की है दुकान,  
इसाफ यहा पर बिकता है,  
चादी के टुकडो के ऊपर,  
ईमान यहा पर प्रिकता है ।  
हो पास आपके चादी के या  
नोट नकद दे सकते हो  
तो बेशक कर दो खून, यहा  
तक फासी से बच सकते हो ।  
या जोरू, जर लो छीन किसी  
का घर फाडो डाका डालो  
हो पैसा पास तुम्हारे तो,  
जिंदा इंसान जला डालो ।

पड जाय जरूरत माँके पर तो गवाह प्रिकाऊ है जी ले लो  
दुनिया का बाजार खुला, हर चीज प्रिकाऊ है जी ले ला

तुम क्या जानो यह कलियुग है,  
हर माल लेबलो पर बिकता  
हर दुकानदार अपनी चीजें  
लेबल चिपका बेचा करता  
बैलो की जोडी के लेबल,  
बापू के चेले बेच रहे  
जन-तंत्र मार्का माल सभी  
कम्पीटीशन पर बेच रहे  
इसका हाथी, उसका घोडा  
यह खडा शेर मतवाला है

है कही झोपड़ी छाप माल  
 तो कही दीपको वाला है  
 सब ओर दुकाने खुली हुई  
 प्रोपेग डे का जोर यहा  
 वस अपना माल बेचने को  
 हर नेता करता शोर यहा  
 सहर के कपटो मे लिपटे, ये वीन बिकाऊ हैं जी ले लो ।  
 दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जी ले लो ।

वह चला गया युग जब  
 लडका लडकी को लडकी लडके को  
 चुनती थी भरे स्वयवर मे  
 जीवन साथी कर लेने को ।  
 लेकिन अब तो देखो शादी,  
 तकड़ी पर तुल कर होती है  
 शादी से पहले लेन देन की  
 रस्म अदायी होती है ।  
 काने खोड, लूने, रागडों के  
 ऐव देखता कौन यहा  
 बरसी सी मिक् जाती बेटी  
 पर दुनिया रहती मोन यहा  
 पैसे के बल पर सूरदास को  
 मृगनयनी मिल सकती है ।  
 मरघट पर लेटे धूडो की  
 चारात यहा सज सफती है ।

यह कह कर के कि लडका, सुंदर, स्वस्थ कमाऊ है जी ले लो ।  
 दुनिया का बाजार खुला हर चीज बिकाऊ है जी ले लो ।



## ढोग

कुछ मुझे कहने तुम्हारे मदिरा म ढोग है ।  
कुछ बताते कि य सारी मस्जिदें भी ढोग है ।  
पूछना हूँ मैं उन्हें इनना बता दे वे मुझे—  
कीन सी इसान की करतूत अब वे-ढोग है ॥

लीडराने इस जमाने की सभी बातें हैं ढोग  
हर बड़े लीडर की तकरीर सभी भूठी हैं ढाग ।  
खद्दरानी चददरे य टोपिया भी ढोग है  
और तो अब क्या कहे, जब जेल जाना ढाग है ॥

था कभी भाषण का अत्र उद्घाटनो का जोर है ।  
हर तरफ कैची स फीता काटने का शोर है ।  
योजना की सब रकम ये कचिया यू खा रही  
इसलिये इस देश का उत्थान सारा ढोग है ॥

य उड़े जलसे सभाए य नुमायश भी है ढोग ।  
हर बड़े लीडर को चाहर से बलाना भी है ढोग ।  
मच पर माला गले मे डालना ये तापिया  
सच मुझे पूछो तो सारा है दिखावा ढोग है ॥

ढोग खाने मे खिलाने म पिलान मे है ढोंग ।  
ढोग कपडा पहनने मे, सादगी रखने मे ढोग ।  
है वही काविल जमाने मे जो करता ढोग है ।  
आजकल की जिदगी का हर पहलू ढोग है ॥

वेश कवियो के बढाना दाढिया रखना है ढोग ।  
मच पर नखरे दिखाना, विगड जाना भी है ढोग ।  
लोग मुझको भी कवि कहते है सो अब क्या कहूँ,  
वरना कहता हर कवि की हर नजाबत ढोग है ॥

नवम्बर '६२

## कवि बनने का फार्मूला

बनना हो कविराज तुम्हें तो मत धरती के गीत बनाओ

आज जाननी हमे नहीं है,  
धरती के अन्तर की पीडा ।

आज जाननी नहीं किसी को,  
ऊप। सध्या की नभ क्रीडा ।

छायावादी छोड़ सखे । अब  
भैम भारती लिखो कविता ।

लिखना ही हो काव्य तुम्हें तो, फिल्मों के वस गीत बनाओ ।

बनना हा कविराज तुम्हें तो मन् धरती के गीत बनाओ ॥

तुम्हीं सोचो जहा 'डालडे'—  
पर केवल मानव जीना हो ।

मखन मिश्री दूध छोड़ जो—  
मिल्क अमेरिकन पीता हो ।

तो समझेगा क्या खाक ? वेद के  
भेदभरी भगवद् गीता को ।

विनय पत्रिका छोड़ सखे । तुम प्रणय प्रीत की रीत बताओ ।

बनना हो कविराज तुम्हें ; तो मत धरती के गीत बनाओ ॥

नुस्खा मेरा अब्बल, इसको—

लिख लो, यदि हो नाम कमाना  
तो कविराज गुरू कर दो तुम

लम्बे लम्बे बाल बढाना ।

और—हमेशा पहनो प्रिय तुम  
खद्दर का कुर्ता पाजामा

कवि सम्मेलन म जाने से पहले घर पर अपना राग जमाओ ।

बनना हो कविराज तुम्हें तो मत धरती के गीत बनाओ ॥

मीरा के पद कौन सुनेगा—

छोडो भी ये राग पुरान

आज 'लता' पर लट्ठ होकर

भूम रहे मारे शीघ्र ।  
 शीघ्र—तलत मरभू रफी क  
 घर घर गाये जात गा  
 इमालिय तुम तागत वत लोरगीत मरगम पर गाओ ।  
 बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ ॥  
 घर मुष्ण रा मत तिम रा  
 भारत शीघ्र भारती गाओ  
 "नम भारती" कविताए इम  
 मुग पर छात जमाता जा ती  
 छाज तिताता से पाल मनु  
 वाता वा पाटू बिन जा ती  
 पढाता हा यदि मरुकाय्य ता किम नेपर" अगवार मंगाओ ।  
 बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ ॥  
 है धती कटा जो एर छ —  
 पर ही लाखी एये घरमा ॥  
 भूपण और विहारो सारे  
 राजाओ पर मौज राने ।  
 छाज चाय के प्याले पर, ये  
 कविगण कोमा तर आ जात ।  
 कुछ तिनडम से काम करो तुम गया घमीटावाद बनाओ ।  
 बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ ॥  
 मचो पर मजु बन करने  
 सीखा तुम थाडा लहराना ।  
 कुछ मस्ती म भूम भूम कर  
 गला फाड कर गीत सुनाना  
 तेली के सिर पर कोल्हू या  
 जाट खाट की तुके मिनाता  
 तुम्हे तुको से मतलब क्या ? तुम गद्य गीत ही लिखते जाओ ।  
 बनना हो कविराज तुम्हे तो मत धरती के गीत बनाओ ॥

## कुछ पैरोडीज

[१]

अब मोहि, भीजत क्यों न उवागो ।  
 ओ मेरे मुना की माता, घर को खोल किवारो ।  
 मत्यानाम दूयो जूतन को, भीज्यो मूट हमारो ।  
 घुटनन तक, जल बहत सड़क पर फुल व्है बहत पनारो ।  
 ऐसी नीट भई का तुम्हरी अत्र तो दया विचारो ।  
 फाटक खोल देस आ बाहिर भीजत पति तुम्हारो ।  
 एहि अतर अकुलाई उठि बह गीली 'ठहरो आवहु' ।  
 कहयो न मायो "अरुण" रात मे फेर सिनेमा जावहु ।

[२]

अपनी पास करहु भगवान ।  
 मय कहते हम फेन' होयगे, निज निज मीना नान ।  
 मम्मी तो कतु कहिये नाही, टडी' हरि हैं प्राण ।  
 दखि रिजट लताडन नी प्रभु है अक्लि मे वान ।  
 बरहु न पुस्तक हाथ लई हौं, जानत मक्ल जहान ।  
 सरदास गुण कह लग अपने, बरनीं कृपा निधान ।

[३]

कहा ली कहिये पति की बात ।  
 सुनहु सखि कवहुन लै हमको सग सिनेमा जात ।  
 हौं चाहति सलवार रसमी बे साडी ले आत ।  
 पाऊडर-क्रीम लिपस्टिक, सडल नेकून उही सुहात ।  
 अपने दुई कुत्ता दुई धोती सूट न कवहु सिलावे ।  
 सँकिड हैड लगत दुल्हा व, जय हमसे बतियावे ।  
 बार बार तुनमी बे दोहा, रटि रटि मोहि सुगावे ।  
 मेरो पति हैं तबहि 'अरुण' जब इगलिस पोइम गावे ।

सीता, सावित्री, अनसूईया,  
तुम गई कहा भासी वाली ।  
रावण, दुर्योधन पग पग पर,  
वो लूट रहा फिर डलहौजी ।

समझा नारी ना रही यहा,  
नारी अब नही अनाडी है ।  
मृत्यु सनिकट आयों की,  
अनियमित चलती नाडी है ।

देवी, थी, पर अब चित्र सिफ  
मु हमागे, वर हमने पाये ।  
लेडी हो, लेट गई कामी  
वूमन बन हो गई, वमन-गत ।

वह रौद्र रूप है कहा भला,  
जब अमुर मदनी नाची थी ।  
हा । वही भवानी नाच रही  
कलवो मे कुरस नतकी सी ।

हो गया समय अब जाग जाग,  
भारत की भाग्य विधाता है ।  
सुसुप्त नीद कर परित्याग  
कत्तव्य जगाने आया है ।

भ्रुकुटी टट्टी कर अरुण नयन,  
रणचण्डी बन कर मतवाली ।  
कर खडग खप्र कर प्रलय उधर,  
भारत पर जिनकी कूर दृष्टि ।  
हे खड्गपाणी रिपु कर सहार  
तव चरणो मे मम नमस्कार ।

मई '५५

## कलम की नोक

चप्पुग्रो से लोग किशती हाकने होंगे,  
अगुलियो क इशारो से मैं किशती हाक लेना हू  
कडापन पत्थरो का है मुझे मानूम लेकिन मैं—  
कलम की नोक से फौलाद का भी तोड सकता हू ।

कलम मेरी कलम, शमशीर है, अमत, जहर भी है ।  
जररत के मुताबिक मैं इसी से काम लेता हू ।  
अधिक ऊचे सिरो को नोक से नीचा झुकाकर मैं,  
भुंके मिर, लटखडातो का, मैं दामन धाम लेता हू ।

कलम वालो ! कलम की नोक बनाये रखना,  
चिकना कागज है मानता हू चलाये रखना ।  
हगिज यह नोक न टूटी ह न कभी टूटेगी  
शत नापाक के हाथो से बचाये रखना ॥

## पाच मुक्तक

मत मुझे गमभना कवि कही मेरे साथी ।  
मैं कागज पर बग, शब्द विछाया करता हूँ ।  
उन शब्दों की रेखाओं से कृच्छ्र चित्र बना  
मैं अपना आहत उर बहताया करता हूँ ।

मैं रहता हूँ तुम सवरी दुनिया में लेकिन—  
सतोष नहीं, मेरे दिल को, इस दुनिया से ।  
इसलिए काव्य की नाव बना करके उस पर—  
अपने दिल को उम पार लगाया करता हूँ ।

मेरी आँखें इतिहास पढा करती हैं तो—  
मस्तिष्क कहा करता "मुझको विश्वास नहीं"  
तब मैं उमको अपना इतिहास सुना करके—  
अपने बीते दिन याद दिलाया करता हूँ ।

थकने को तो हूँ, थके हुए ये पर मगर—  
क्या करूँ ? विवश हूँ, मेरी मजिल पास नहीं ।  
जब पैर ठिठक जाते हैं, पथ पर आकर तो—  
मैं गाकर अपने गीत, बढाया करता हूँ ।

मैं ऊपर से हूँ शात मगर मेरे उर की—  
खिडकी से देखो भाव, धधकती है होली ।  
जब प्रलय अनल सी आग धधकने लगती तो—  
दो वृद्ध दृगो से डाल बुझाया करता हूँ ।

## शरद् का चाँद

शरद् के चाद  
अवसाद ने सागर मे  
क्यो डूबे हो आज ?  
पराजय स्वीकारना  
मन भूजो—पाप है  
भीरुता—जीवन का  
बहुत बडा—शाप है  
विचरो—निस्सशय  
पी लो—इस नभ के—  
समूचे तम को  
क्योकि यह—सत्य है  
उजाला—अधेरे से  
आज तक हारा नही है  
क्योकि एक दिन  
श्वेत होगा  
यह अमित आकाश  
और—यह पकिल  
मिटेगी रात ।  
शरद् चाद ।  
तुम अभय हो  
चमको—सम्पूर्ण ऐश्वर्य के साथ ।



## अभ्यर्थना

अपनी अतृप्त इच्छाओं की  
पूर्ति के लिए—

इन निमग्न

पत्थरों के सामने

मैंने

अचना

अभ्यर्थना

कभी भी नहीं की ।

क्योंकि—मैं जानता हूँ

इन पापाणों का अभ्यन्तर

कभी नहीं पिघलता ।

इन पर मैंने

अजलि भर जल

कभी नहीं चढाया

क्योंकि—इनकी आँखें

कभी भी गीली तन न हुईं

न जाने क्यों ?

बिना हिले

बिना डुले

फटी फटी आँखों से

देखते रहते हैं

ये पत्थर ।

## एक प्रश्न एक उत्तर

मेरे सम्मुख खड़ा है  
अनघटे पत्थरो की छाती पर  
एक वयोवृद्ध खण्डहर  
और—एक भव्य भवन  
दोनों के मध्य  
फूटकारता फणियर माप सा  
एक प्रश्नचि ह  
प्रथम—मेरे इतिहास की  
अनेक घटनाओं का साक्षी  
दूसरा—वर्तमान युग का  
दीप्तियुक्त एक दपण  
किस की श्रेष्ठता स्वीकार ?  
किसे हेय मानू ?  
सुनता हूँ—  
सब कुछ ठीक है' जो नया है  
'कुछ भी नहीं है' जो पुराना है  
इस मानू भी तो  
आज हम, जो कुछ सचि कर रहे हैं  
भावी पीढ़ी को सौंपने  
क्या वह व्यथ नहीं होगा  
हमारा वर्तमान  
पहचाना जायेगा  
अतीत के मर्म्योघन से  
उनके लिए  
क्या 'वह'  
कुछ नहीं होगा ?  
इसलिए मुझे  
इन भव्य भवनो क साथ साथ  
खण्डहरो की श्रेष्ठता स्वीकार है ।'

## निर्मिति

ये रग

लाल, हरे, पीले

कुछ सूते—कुछ गीने

रग की पेटो में

सुकुमार शिशुओं से

देखो ! जो लेटे हैं

तूलिका इनकी मा है

इसी के ये बेटे हैं

×        ×        ×

जब जब यह इन्हें

चाटती है—चूमती है

वात्सल्य से विह्वल हा

स्वयं को इनमें खो

तब तब

दिवारों पर टग

के नवास पर

कोई न कोई चित्र—

अवश्य उभरता है

कहने को हम इसे

घाट कह

कला कह

कुछ भी कह सकते हैं ।

वौना हो गया हू

किसी अपराध थोपे गये

निर्दोष अपराधी सा

जब जब मैं

खड़ा पाता हू अपने आपको

किसी चमकदार चौड़ी मेज के पास

तो मुझे ऐसा लगता है—

कि यकायक मैं बहुत वौना हो गया हू

या किसी विदेशी भाषा की सज्ञा का—

केवल शब्द मात्र हू

जिसे अभी अभी

किसी अडियल पैन की निब से काट कर

अथहीन सकलक क्रिया—किया गया हो

मैं मौन हू

कुछ-कुछ इस प्रकार अनुभव करता हू

जैम किसी हारे हुए जुआरी को देखकर

उमके तथाकथित मित्रों ने कहकहे लगाये हों

चाहता हू इन औपचारिकताओं के घोल से पुते कमरे

इन मेजों और कुर्सियों के भद्दे सायों से

वही बहुत दूर—चला जाऊँ

किन्तु फिर सोचता हू कि

कलेण्डर में अंकित सभ्याओं मे

पहले से ही बहुत फासला है ।

तुम और हम

ओ हमारे स्वर्गस्य पुरखो ।

आज हम

तुम लोग से

बहुत आगे है ।

क्योकि—

हमने अपनी जीभ की जगह—

फिट कर ली है—

सरकस के तार पर चलने वाली

लडकिया ।

और

सदभों के छाते थमाकर

हमने, उ ह साध लिया है ।

सुन कर तुम्हे अचभा होगा—

कि

हमने अपने हाथो को तोड कर

भर लिया है, अपने ही सिरों मे,

और

अब हमारी आखो म

पुतलियो के नाम पर

शेष रह गये हैं

पश्चिमी बोतलो के

उधार लिए

चद टुकडे ।

## प्रवचना

कभी-कभी जाने—

ऐसा क्यों लगता है ?

कि, राष्ट्र के मंदिर के चारों ओर  
बहते

पतित प्रवृत्तियों के  
इन भ्रष्टाचारी नालों के अजगरी मुख  
जब तक नहीं होंगे बद  
तब तक

भोली आस्थाए—निर्दोष मायताए

पुनर्जीवित नहीं हागी

क्योंकि यह परामुखापेशी पाखण्ड  
जाला बुनने में—मछलिया तकने में

मन मैले बगुलो

निदयी मकड़ियों से

अधिक कुशल है

इसलिए मुझे भय है

कहीं ? इस बार भी

बेचारा सत्य

मिथ्या के हाथों

छल लिया न जावे ।

## अक्षर अक्षर की कतरन

मैंने अपने निजी वक्ष में इच्छाया को  
लम्बा करके विद्या लिया है  
जिसकी—सभा पारदर्शी ऊँची दीवारें  
अन्दर बाहर जैसा है—वैसा दिखता है  
जिन पर बूढ़ी स्मृतियों के चित्र टगे जा  
अलग-अलग सब आकृतियों के  
चाहे उलट पलट कर देखू  
आडा आँधा  
चाहे पलट-पलट कर देखू  
सब में मुझ को अपना ही चेहरा दिखता है  
और इधर  
अक्षर अक्षर की यह कतरन है  
बहुत बार जोड़ा इनको— कि शब्द बनेगा  
लेकिन वे हर बार रुढ़ के रुढ़  
व्यय सब मेहनत मेरी  
बहुत बार भु भलाहट आयी  
फिर समझाया अपने मन की  
दावों का अपने में कुछ अस्तित्व नहीं है  
मिलने के पहले अक्षर थे  
मिलने के पीछे अक्षर हैं  
इसी अथ न  
मुझको नूतन ज म दिया है ।

चीन से

चीनी मिट्टी के बतनो !

मानता हूँ

तुम्हारा दूधिया रंग,

किनारों की सुनहरी बॉर्डर,

वेल-बूटो के डिजाइन

ग्राहक को

अपनी ओर खींच लेते है ।

क्योंकि—तुम्हारे भीतर के—

खुरदरेपन को

ठमरने जो नहीं देती

नियंत्रण स्त्री ग्लेज की पालिश

वैसे तुम आज—

सोने, चादी तांबे और

पीतल के बतनो की अपेक्षा

अधिक ही विक्रने हो

सस्त जो हा ।

चीनी मिट्टी के बतनो !

इसे तुम भी मानोगे

—जहां तुम जाते हो ।

पहले-महल सम्मान पा जाते हो

पर न जाने क्यों ? हर घर में

सोने, चादी, तांबे के बतनो की तरह

सच है न ?

अधिक दिनों तक तुम टिक नहीं पाते हो ।



## कृतघ्नता

मेरे घर के पास वाला  
एक नाला  
जन्म जिसका  
जानते हैं सब  
मेरी ही भुजाओ से हुआ है ।  
इसलिए कि  
तारकोली रग का भवच्छुद्ध पानी  
मुक्ति पा, आजाद होकर  
बेचारा बह सकेगा ।  
किन्तु वह कृतघ्न  
द्वार पर मेरे ही  
कुत्सित इरादे लिए भड़ा हुआ है  
भेजता है, मच्छरों को  
उल्टा मेरे ही घर  
ताकि वे मच्छर  
फला सकें, नये नये रोग ।  
छोड़ दें घर को ऊब कर लोग ।  
जिससे घर को लील सके  
यह दुष्ट नाला ।  
पर तु यह नहीं जानता कि—  
ये सभी कमरे  
जिन्हे मैंने सजाया है, सवारा है  
यहा का चप्पा चप्पा  
मुझे अपने प्राणों से भी प्यारा है ।

## अधर की स्थिति

बीमार दीवारो ने  
कच्चे घागो मे पिरोकर  
लटका दी है—हमारी सभी छतें  
तकड़ियो पर तोल कर  
बेच चुकी है  
व अपने कधो का निहित बल  
अततोगत्वा  
अधर की यह स्थिति  
और इसके सभावित परिणाम  
लीलना चाहेंगे  
अवश्य ही किसी दिन  
हमारा—  
भूत  
भविष्य  
वनमान ।

## इलैकशन

कितना डीठ है, यह कोलाहल ?

जिसी प्रवञ्ची भिक्षु मा

लोट कर, लो फिर घा गया है

गली गली, द्वार-द्वार

तिडकिया स फँते गप बासी रपम

आठ लिए हैं इसने अपन शरीर पर

चौसता इधर उधर

भागता इधर उधर

कितना वाचाल है यह कोलाहल ?

बोलिया—एक क्या

अनेक बोलता है एक साथ

हिला हाथ

जिनके अर्थ

किमी टूटे साइन बोर्ड के अक्षरो की तरह

घिसे पिटे

कटे फटे

बिल्कुल अस्पष्ट ।

कितना बहुरूपिया है यह कोलाहल ?

इसके लिए आट'माने

केवल—'पैसा है'

इसका नकली लहू

हू ब हू असली जसा है

इसीलिए भरता है यह—

देवी देवताओ

पीरो पगम्बरो

साधुओ सतो को

पलट-पलट सभी स्वाग

कितना अजीब है यह कोलाहल ?

